

गले परना हुआ भरोड़े। दीने में।

नारा आस की नार मे वाली, जग की रक्षा करने वाली
बिन खाता से भरने वाली.. वशा मुड कटा म के

बिन सोत से मार मोरे ॥ दीने में।

हे शजन मेरी अनि के उपर की गौ गौर गल के उपर
की सा राम फल के उपर। गाता हनु वता ग

आ भरो मते अलग छोरे। दीने में ॥

गगन

की है सो प्रान कुशी विनाश कतमा मगौ वें कनेवाले.

उही को ओ है वशी सहा गक.. हु मे मे जालि मन शानेवाले ॥

बि में है उमर भर है दूख नि सका. है मात मलयन दही को मसका.

गज व है का है गला उमी का उमी का है खूं व होनेवाले ॥

गऊ के जागे ही हल चलाने, गऊ के जागे ही अनन्य माने,

जिन्दे कसा कर महनिन मिलाने, वही है इनके मतानेवाले ॥

गऊ के जागे ही देस का गी, इही पै निर्ग रहे का शत कारी,

इही की गदिन पै हाय कसरी, चला में हई चलावेवाले ॥

माना है दुनि पाये कौन से सा, को जो उपकार माग के सा

मिलाने मे मलयन नोखा म मसका, वही ल दे हन चलावेवाले ॥

कि मान भारत के आज सारे दुबे हैं मुझलि सव दुन विगारे
विगड़ रहे हैं कन के मोरे, यह सब की से जी कमने वाले ॥
कभी जो दश को गाने ल आता, वह तो को भी अब नहीं है पाता
पकड़ के रो रहे हैं अपना माया, तमास खेती करने वाले ॥
जो कभी की ही बंदो बत, हुई जो दुःख और भी की ललनत ।
बता दो आने कहां से ताकत हैं मूली से पी के खजे वाले ॥
करोड़ हों रहे हैं महंजन, जिन्हें न ही लेते भी के दशन,
हमेशा करते हैं सुशान्द भोजन, शरीर का रंग के हने वाले ॥
मिले न हीं निन को दूध और घी, बड़े भना कैसे बल भोजनी ।
न हीं समकते मगर कुशु की, पेमां ससे तन फुलाने वाले ॥
गुनाह मोहमन कुशी सा पाये, नहीं है दीगर रा विगारे ।
भना करे जो उसी को माने, हो कैसे अहसां भुलाने वाले ॥
दुखरे पंचम नि जान आली, हो अकि भारत के आप वाली ।
नुमारी इसने पनाह वाली, नुमारी हो इस के न चाने वाले ॥
करोड़ का कर यह दुःख कासी, न मारी जावे गऊ विगारी
हुई है भारत प्रजा दुःखारी, हैं आप दुःख के हथिये वाले ॥
कि सी को सालिग जो है सनाते, नहीं वह भाग्य दुःख भी वाले ॥
हमेशा रहते हैं दुःख उगतो, कि तो के दिन को दुःख लिना नें ॥

प्यारे सजनो गोबधकरना पाकमाना महापाहै । अत लिसतर हते लो
गोव धको रो कना ह मने गो कविता ना करी व्यै है । अब नत जुवाले
लने वाले महाभयो को कथा २ त क नीके उठानी पड़ती है नतात हूं
देहा

विष बाद वानर रोगि गा । न्यासी लुभी नार
पांयो श्री कुदु पतन हीं । ब्रह्मां कृष्ण नार ॥१॥
राजानन से हेर गये । उगे मुनि विर भूप ।
सब प्रभुता दी जाती है । मोन रोजे वत भूप ॥२॥
थिक्कार भूआ खेवन की । मत मान बलो उपात की
धर्म से बढ परता पन ही है । उगे प्र से बढ को हना पन ही है
भूमे से बढ कर पावन ही है ये आदत बढ जात की
लानत उत गुरु खेवन को दि।

जीता ग्यासी धन छो देखा । हाहा गूड़ पकड़ सोवे गा ।

विषत भरेना मुख सोवे गा । नींद जाय दिन रात की

दुःखि जाया पड़ने डलन को दि।

जहनात फ वाल क मारेगे । दून नोरी परलित चारेगे

पद ति दि यो पै हाथ जरेगे । दूमता रने मात की

अमृत मे निष खेवन को । दि।

सब सखे ने हि स मिटेना हं से ना ते पे हि स मिटेना
नाखि दो हे हि स मिटेना सुनेन गर बिनु मात की
की सा सब की ओत न को ॥ ४६ ॥

पुसरा

खेलन में न जान ही है, पेशागरा ज्वारी का
धर्मिया मन्थनी लि रहे ना, भीन दसा सुन प्रीति रहे ना ॥
हार जीत कोई प्रीति रहे ना, कि सी खि झि ला डी ना ।

पत कि सी की ना हि रहे है । खेलन ।

गजगा द धन वस्तु हार है, वे दावे दी को पकड़ा है ।

और के हाथ मे हाथ ग हा है । अपनी ना सी का ॥

मैं सां नी या न कह ही है ॥ खे ॥

जीना का सी भइ न बनावे । हास खोटे पाव क मावे ॥

माल वि गाना ठ गार लावे । ओ सी जा सी का ॥

संगत भी सना न ही है ॥ खेलन ॥

धर्मिया ग कर अ धर्म करना, सपुत्र को को कभी न बना

की सा कहे ध्यान डुर धरना । कथन हसारी का

सत सत की डुगर ग ही है ॥ खेलन ॥

अब स स्तुत के पुत्र को से प्रत के ना प्रसादा दे जे

श्रुत श्रीकृष्ण से वडा एक पद होता है राजा भों के लि मे भव्य न्त हा नि का र कहे
१०॥ अन्त में ने नपा दशत मो है देखे मे ध्यान ले (१००॥)

राज्ञी श्रुत श्रीकृष्ण वैद्य स्याऽपश्य सेवनं नित्यम

भक्त स्य चाऽन सत्वं ॥ सञ्जोनाशं परं कुरुते ॥१॥

पूर्व नामस्तदनु सकल स्वाध्याय निर्विना दो,

मा पा मिय्या मह रसिकता ॥ राजनी ते विरोधः ॥

स्पष्टा चिह्नि १५ पले मतिता ॥ मत्सरो मान चिन्ता ॥

सन्ता पश्य स्वजनतिरह १५ मयी श्रुतदोषाः ॥२॥

श्रुते जितं अनंलब्धा ॥ नतो वेषा सु मज्जते ॥

तत्सद्भात्यति तो श्रुता पुरन्तं पुः स्व मश्रुते ॥३॥

दैवानु श्रुतेन कदाचिदेव.

कतनीज्ज मं स चेत्तुमनः पुण्ड्रः

तदा ज पाशा न शान्ति च्छन्ति चो

श्रुते त पश्यता दधनी कृतः सः ॥४॥

आनंदैव वशा लोके विमुक्तमपि श्रीः सताम् ॥

उक्तिताऽनु विताये पुः विमुक्त परि वर्तते ॥५॥

विद्वत्समागमे विद्या ॥ तिरस्कारे पातः क्रमः ॥

मुखे स्वधर्म सेना ॥ पुः ले भौ वी पती कथते ॥६॥

अ आ बि ने से महा न नत को मुक्ति केर की मो मुक्ति हुई है न ६५ -
दशा वही मानते हैंगे अला चाहे कैसा ही खनी माननी पुस्त से पराना

खेतना सबके नि मे मना है

अन कुशु ईश की शरण गति में आये हुये पुस्तों का गान लिखते हैं

शरण हम प्रभु तेरी आये हुये हैं ,

ये कर जोड़े तू को भुकाये हुये हैं ॥

नभाली न भाला में हम चित्त लगे हैं

तने पापी पुण्य को भुनाये हुये हैं ॥

भुंका में कं सके पुस्तान्धता गा .

कु संगति से हार न स दताये हुये हैं ॥

नभाल है न भाली न लि का की शक्ति ,

अ ओ ग ही पे भवने भुलाये हुये हैं ,

प्रकृत हो भुनकम और भुनकनों में ,

मिले अम भन जो गं वये हुये हैं ॥

हो सत वि वा और शान से शह हृदय ,

निमम बाले जो तू बनाये हुये हैं ॥

गंगा त गभी नि पर उ व शर सीखे

मिटे भव मन में जोला भेद मे हुये ॥

नान के विषय मे श्राद्ध करने के निमित्त इश्वर प्रायना।

सुख शान्ति का हमें प्रभु प्रभु मार्ग अब दिखाओ।

भानन्दर सख सैं है हमको पही जताते ॥१॥

सर्व स निवारक का पक्ष स भी नगद तुम।

विज्ञान भी बड़े हो निजा हमें व द्यो ॥२॥

पानक तथा विधाता संसार के तुम्ही हो।

सोखा नि तुम गुणों की, ५२ गुण हमें सिखाओ ॥३॥

आचार तुम जगत के आधीन सब तुम्हारे।

कुछ मेम मम सुधा भव हमें को पीता पिलाओ ॥४॥

कानों पीता बड़े तुम आमान सब दिने हैं।

वसना नभ गति का अर्थ प्रभु सत्य को दिलाओ ॥५॥

वशति की महविषी नेदान कई शक्ति कानता भा है पर

सने की मेरा नानाना असा मानं विस्मियते - महामागत

काना का सगे व त था शिरो का प है ही कई कलि में रात

करने से ही मुन ब्रह्म असार संसार से पाटं गत हो सता है

अन्य भा कोई उपाय भवता पर से पाट हो मे जान ही है

तथा परं कृत गुणे अता गां आवृत्ताने।

हा परे वर मे कृत, कान के कलि गुणे जग

सत्य-की-वा-ख्या-पानी-सत्य-कहे-ते-जिसे-है

सत्या-ना-सी-परो-ध-मः, सत्ये-ना-सी-अ-प-कथित,

सत्य-व-द, सत्य-प्र-ह-द-ह्यादि-श्रुतिः

१. लो-कः

सत्यं-ना-मान्य-मं-नि-य-म-वि-का-रित-वै-व-य।

सर्व-ध-म-वि-सू-हे-न, को-जे-नै-त-द-वा-प्यते॥१॥ भा-॥ अः॥

सत्यो-प-रि-जो-ग-भा-यो-या-स-स्य-क-थ-म-

६६ सत्ये-प-भा-ये-ना-इ-म-न-सी-प-भा-द-धं-म-न-मि-तं-य-था-अ-तं-त-था

वा-इ-म-न-स-अ-ने-ति-प-र-ज-स्व-वे-ध-सं-क्रान्त-मे-व-मु-क्ता-सा-गो-दे-न

वं-चि-ता-भ्रान्ता-वा-प्र-ति-प-त्ति-व-ल-षा-वा-भ-वे-त-इ-मे-वा-स-व-

भू-तो-प-वा-त-प-रै-व-स्या-न-स-त्य-म-भ-वे-त-वा-प-स-व-भ-वे-ते-त

गु-ण-य-भा-से-न-गु-ण-प्र-ति-रु-प-के-न-क-व-न्त-मः-पा-म-या-त-त-स्मा-त-

स-व-भू-त-हि-तं-स-त्यं-वृ-पा-त-इ-या-दि-भा-ग-क-वि-प्र-य-नि-जी-ते-है

अ-त-प-थ-मे-भी-लि-ला-हे-कि-६६ मः-स-त्यं-व-द-ति-प-था-ग्निः

स-मि-हं-तं-व-ते-ना-भि-सि-न्ने-दे-व-१०० है-न-१०० स-उ-क्षि-प-य-ति

त-स्य-भू-तो-भू-य-ए-वे-ते-जो-भ-व-ति, अ-मे-व-तो-वै-१०० सो-म-द-तं

व-द-ति-इ-या-दि-मा-ख्या-से-अ-म-को-अं-द्रा-द-भू-या-स-त्य-के-उ-प-

व-त-ता-मा-है-अ-त-उ-प-ते-क-ग-तो-आ-भा-वा-ध-हि-मि-में-द-र-है-है॥

सब उभे कहते हैं कि जैसा देखा हो सुना हो या भुगु मात किता हो उस के मर
हो अहमन और सत्यना भी से कहनात या भवने निश्चय कि ये हुये को दूसरे
से कहें तब निश्चय प्रमद होत और सत्यना ने न बन कहें नि ससे सगला
प्राणि में श्रोता भ हो कि सी को सजि न हो तपो कि निः स न बन तो स जी को को सुनि
बहु मंति हैं ने सत्यन ही होत । को कि म ने लिखा है कि सत्यं भु मात सि मं
भु मात न भु मात सत्य म वि म म । अतः उन से पाप सि होता है । और जो
लोग पुण्य का वादना करे संसार को जो से में जानते हैं ने म हा न क म
जाते हैं । अतः सती प्राणि में के हित का एक सत्यना आचरता कहें)
भा सत्यना ही है उस की उन ति इस प्रकार होती है जै से चत के द्वारा
अग्नि काते न तो न २ च दता जाता है और उस का तेज और सत्य अजत
न दता जाता है जो भ सत्यना ही है वह इस प्रकार न द होना है
जै से जल डालने से अग्नि काते न तो न २ च दता जाता है अतः
सत्य जो न ना आदि मे अह नो न ना म हा पा प है अतः तेन सा से
सत्यना ही आचरता करो सत्याचार से पुण्य में भी हो संगति करो
दे जो सत्य जो न ने वाता ही हरिश्चन्द्र ना संभाव्य अगति सजो पता
जो सत्यता पर तन मन धन पुण्य कलम सत्यों को वे म जाना उस का
य ह प्रसा पा कि । दो हा । सत्य है सूर्य है । है न पत और हा
वे द ह श्री हरिश्चन्द्र को ॥ है न सत्य लिखा ॥ १॥

इस धर्म के वैराग्य ने प्रवृत्त हो डटे (सत्य की भावना)

शरीर ने इतना साके सखावत में भर लिये ..

दिन उत के जो तमास गोमो रंज में करे,

पर कर लिता अहि दजो न उत से जग हटे ..

कितने ही उत के धर्म का अहवाल हिस्सा मे-

गने बिनी कुंवर भी बिना आप्रविक्रम मे ..

(निष्ठा भाति) श्री गणेश भी धर्म मे क्या न कुंवर दिया।

तस्मिन् शाही को जो उत के वन वास मे लिता ..

जो न बरसा का वन में जमाना न सह दित्त ..

कुंवर को पानवने भाव्य गने मोनाप को दिता

कैकरी बध लिता गने पुन की गली के सिन्धु मे उप द्रव्य दिता

परतनी हाव से आने पर भतने क्या दिता सुनो ।

कश्मीर से जब भावे थे भरतजी सुने वतन ।

धर्मिमा थे दिन में दिता आपने पह पहत ..

हृदय राता गोत रक्त के मे जो थे गये व हवन ..

हरमि नन राज गली में (वस्त्र) मा में नदन ..

जो न बरसा का वन में जमाना न सह दित्त ..

तस्मिन् शाही स्वर्ण से उत की सजा दिता

मम मन तन मन की सन्तान प्रभु कहै किहोने सब के ॥ १ ॥
जोरे सज्जनो जि सजाति में जमले जि स मुन्य ने अपने जाति के उपाति में
नि तो अपना तन मन धन सम पशो नही कि पाउ सका जन्म का गीगा

श्लोकः

सजातो येन जातेन , जातिवंशः समुत्पत्तिम् ॥
परिवर्तते नि संसारे , मृतः को नान जा पते ॥ १ ॥
जिसको न निज गौरवत था निज देश का अभिमान है ,
वहनरन ही नर पशु नि स है , और मृतक समान है ॥
त । जिस जाति में पैदा हुये इस देह जलान न हुआ ।
उस बाल काल बिना शरीर , अवतल जहँ जाल न हुआ ।
निज पूर्व जों के काम पर , जन्मी जन्म जन्म का म पर
कुल जाति का शी जन्म भू के प्राण का देना म पर
तन मन विमान सुख से सम पशो है नही जिसने किया ।
हेना थउ सका जन्म जन्म में लभियो तूने दिना ॥ १ ॥
जनमो जन्म भूति ने दी पर , जो सब स्वयं दाते हैं ।
धन्य जग जीवन उनका , जन्म स भुजने पाते हैं ॥
चतुर माती जो हैं नेष्ट भुखा लौं द देते हैं
जिन्हें देव दिना मा मा का वलन का दरे ते हैं

कति मे उसे आनन्द से जो जाति कर्म है

उस को निवारि मे लिजो है जो काय है.

बार बार ओपनि ना टगा कि जी मे निज कर्म के,

संसार सागदि जी ते मे पागि मे न धर्म के ॥

वडा मे शक्ति ना है कि मर्जु मे द मे लिखा है कि आत्म पा निर

मेतावत के न जं मूगं धारण म मही भा पर एही न वहु का

कापन मर दुआ कि शक्ति जने ऊ पहने न मे न सीध सका कत

रता दुआ । यौ । शुद्धि जने उपाहि शा ना ।

मे लि जने ऊ मे हिं कुश ना ॥

ले ना

बाद शक्ति के न न सन । हमें न मते न दुआ मे ॥

जाय न स तो निप न ट ॥ अं रवि दि ला न हिं डा मे ॥

मदन ही स म कते कि मीता मे भ म न ने का लिखे है देखे मे

मे जान स्व धर्मो विगुणः पर धर्मो विगुं कृतात ॥

स्व धर्मो निधनं श्री पाः ॥ पर धर्मो गि पा न ट ॥ अ ॥ १३

स्वैः कर्मैः पर धर्मः ॥ सं सिद्धिं लभते न ट ॥

स्व कर्म मे निरतः सिद्धि म ॥ म भा विरति त वृण ॥ १४ ॥ १२ ॥

अ न शा शा न न शा मे दु मे ह न न न नै सी से मु न वा उ न ति नो शा स से नै

स जगत् कहत न भवति म० मुक्तों कर्म के बन्धने ।
 सक दिन स जायते जो म० मुक्तों सिद्धम के बन्धने ॥
 हा मेरा प्यारी कुल है नाटक हुआ है नाटक ।
 तो ही सादे मोटा आँखें हस मके बन्धने ॥
 दोनूना जसा थुड़ी रजत ल कास हो गो ।

ॐ ह्रीं कनके त्रिं ॥ कनकादिप्रभे वदने ॥
 इति कनकादिप्रभे वदने ॥ वदने परमप्रभे वदने ॥
 वदने परमप्रभे वदने ॥ वदने परमप्रभे वदने ॥

आन कलमे सान नडे का व मी जावु वो कहे जाते जो कैसन तो खूब
न जाते गाड़ी मे ने दि कह के जा व जाते गुसा जाते वादा न में ए दो
सा भी न ही देते ॥

रत्ना मन्त्रे पावन विद्वि रत ओ छ है वै छ सभा सिंघनें भवने ला
 ओती कितासी की साहि सी ओ दत पे दव हा मन्त्रि मो जत पै ला
 वंश जो पा लव रत्ना न ते है इष्ट रूप कहा म वने कि है दे ला
 सा न करे वंशी सा हिनी की सा रु दाने मे देतन रत्ना अधो ला

अवधारित नर्य को कुछ पाठ्य सामग्री को अनिवार्य नकरा
हुं मे हूँ छात्र मांगते हैं कि वे भी अपने छात्रों को अनिवार्य
करते हैं जो छात्रों को भी अपने छात्रों को अनिवार्य

सतदेशा प्रसूतस्य । सप्तशतं राजा जमेनः ।

स्वं स्वं चरिभं ॥ श्रीक्षेत्रं पणिनां शर्मामनाः ॥१॥

इत्येते गृहं निरुद्धं आ किं पालिके ईश्वरदेशां है तो भारतवर्ष
इत विवर्षये श्रं कत आ पी जी श्रं कर दिक्कित प मेमगावत नाते है
मा प निरी देना किन्तु गीत ना नि । यना सुते भारत प्रमिगगे
स्वमी वन ग ल्या न हेतु प्रते मव नि भूय प्रह्वत प्रह्वत ॥१॥
कि र वत नाते है

जानी मनेत त कल पं लिनीगे, स्वर्ग प्रदे क म नि दे व न्य म ।
प्राक् सु माग अन्ना ख जते मनु आ, मे भारत ने दि म नी र हीना ॥२॥
ज हां दे व म ना भी जाने की म ह ति हो उ क प ला करते है व हां की सु
जात अ व न पा न कि हा त र ह कि गा जा वो दे खी से स क म अ न र ह पा
म ना क हां पर व ता दे भारत । व ह प हि ना जो हो ज ना त ते ह
क हां ग ह ते मी शाने शौ क त । कि ना र म ना व ह म ना न ते र ॥
क हां ग ह ते मी वे व वि छा । व ह र श्व री शान का ख ज ना
अ मु न् से ईश्व र ने आ जो सौ पा ॥ कि ना र म ना हो न ह म ना न ते
क हां व ह जो ति व क हां व ह सं त क । क हां है त म हु न र दि मा जी ।
क हां मे उ पर जो प हुं ना त था । कि ना र म ना व ह म ना न ते र ।
क हां व ह म ति गा क हां व ह ना है । क हां व ह री व म क क है ॥

कि जि स से मानिन्ह महरि अनवर, चमकर हा वा ज मान ते रा ॥

कहैं गता ते रा सदा भाव सा, सुकर्म सब सुख सा दा रा ॥

गता कहैं परब ह प्रेम पूर्ब ने, कि मा जो अन मोल जा न ते रा ॥

समाधि कि रि वा व मो ग न ते, अजर असर के भजन में दा रा ॥

रा रा भर पूर अस्त निजा, ते देश, हर संस्र जा न ते रा ॥

नहीं था दुनि गो में ते रा शानी, सुखे दुखो दुख में को ॥

जा रा न सु मा नि के वैसा है का निज, तेजा वा रोशन ह मा न ते रा ॥

नहीं वा नू मे सा का नि कि रता, नहीं था ये सा न ते ने ख दा ॥

नहीं था ये सा गु नी लो रू द्धा, नहीं जिहं वा गो हा न ते रा ॥

नहीं भि तु क में मु क द में वा नी, नहीं भि तु क में गो की ना सा नी ॥

हमेशा रहता था तु क से रा जी, न ह का दि रे अ न ज ना न ते रा ॥

नवा न जा ते रे हो रे हैं, इना द भु ग जो नि का क नी मा ॥

क नू न ख नी ने र स्म द ने, नि गो है मूं स न नि का न ते रा ॥

पु न रा ते कर जन म जो आ ने, क णा द गो न म मो वा स आ दी ॥

ग की है स र को म क ह के रो ने, जो देखे ये सा न जा न ते रा ॥

क मा न अ फ सो स है फ ह सर त, कि ते न जो ना द सो र हो है ॥

न ही है को ई कि उ ह के देखे, कि क्यों है ने ह रा नि जा न ते रा ॥

न नी न मु ख ना र वा नु प ठि त, र ह स सो म जो अ नी ते नि न ॥

सभी के सवत्स में देखवर हैं जो हमारे हाथों में ॥

न का २ खाने में मिस्तूनी, के सेतो-पानाने अमर है।

जगत् के लोके नर कि सी से सा निगुनाने लोके नर ते माने
हो कहै नर ते नर मानकी लेग टिकि निगुन मान यो नर

५६ हरे विष्णु मंत्रादि साधनसाहस्य ज्ञानयोगीय गीतां के साधक संज्ञे

निर्माणवत्तुमयी भाष्य ० ६४ श्रीरामायणी श्री भाष्य ० ६४ श्रीरामायणी

सम्पत्तिः सप्तमः तन्मोः सुखेति सप्तमः तन्मोः सुखेति

॥ सत्यं ज्ञानं परमात्मनो ब्रह्मैवमात्मनो ब्रह्मैवमात्मनो ब्रह्मैवमात्मनो ॥

ममन

है एक सज्जन को पट्टा माता, संतानों जिस काजी को है।

बही जो ई मासे हा भी है. कनामे जिसका भी था...

दि मात न भ म ये दि क सो, न जाना नाम वि मा, हा,

किरा नी मादुरानी जल . वनाले नि संक्रा नी पाहे ॥

...सहभाषणों की दृष्टि से राजों की।

मि दा भ. व. भ. म. जि. ता. हे. व. ज. ने. नि. स. म. जी. ता. हे.

मिथी और धन को पुना दना नारायण ही जीवों के

निद्रा यम कानं नी नीले काने निद्रा नी नीले

श्रीगुरुदेवकी आज्ञासे

नहीं कुछ कुछ मह सच, आज माने जिसका जो गढ़े ॥

कहे तो ही जो हित की, उम्मे सप्र के है ये ह वै ही ॥

नहीं किसी को सुनते है, माने जिसका जो गढ़े ॥

दशा नि गडी है भारत की सुधा से सदा । सिन्धु नून ५९ ॥

पडा मह भूषि सिन्हा है, उदाले जिसका जो गढ़े ॥ २ ॥

दामना धरे सा मे भारत हो गंगा न गङ्गा का ५९ भी उदरे भी भाग

भारत की नीले बहो है, वृक्ष भारत न बूझ वनी सा । मे न उदरे सा

समस्त सा सुधा सप्र मे न और साधना का न साधना की मे न सारी

सा हसा धि अमु हिन्दु मे न सा सा सा कभी सा सा ॥

सा मे वृक्ष न सा सा सा, सा सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

सा सा सा सा सा सा सा, सा सा सा सा सा सा ॥

विद्या काशाब्दार्थः

विद्या यते सा रा सा हो न मा सा विद्या

विद्याति मा भिर्जनाः सा विद्या

विद्या यते सा रा सा हो न मा सा विद्या

संसार में संस्कृत विद्या से न बकर को दूख का मुक्ति है

कहे राम भक्ति ने बहु सिद्ध कर पुनः है कि नहि को ह

उपाय ना सा भि न ह्यती प्रोक्ष शास्त्र जो विद्या है तो संतान

विद्या कात सं पर श न क वि म हो दग मात नहि को ह

पता न दे सुनि मे ।

न दान विद्या से नहि को ह न ब्रह्म विद्या प्रो को ह विद्या

कहे से भारत के नव विद्वानो । नहि न करे है सो ह विद्या ॥

उपाय विद्या की आरती को , अगा नो भारत की आरती को ।

नहि है शंकर का प्रभारी , कि जि सने प हने सं जो ह विद्या ।

उपाय की नहि ना न भासा है , कि जि स केशव मे प्रसा है ।

अगे जे नव हम नगे गो विद्या ॥ हमो तो सो मे जो सो ह विद्या ॥

हमे तो नम हर के नाम की है , प्रभार भी राये प्रभार की है ।

हम वि से ती भी कन उहेगी , जो हमने नि हन से मे ह विद्या ॥

सा विद्या मा विमुक्त मे , विद्या को सा प्रो न मे ॥

करके विवाहं यथां से पदुं नी इंगति ज्ञान में ।

भारत सुतन भूना द्रव्यो ना विद्या नुरते द्वात न दीना ।

भारत त न प आ ख्यो भूति होना ॥ भरो मोर अं पि पा न में ॥

न हो ॥ गये ज्ञाना स न कादि ॥ लोतम पा न भवन इ सुत न

र हा न को री प्र म गा ह ॥ आपो के सं ज्ञान में ।

प्रो विदधी न हरि न म पु थि हि ॥ राम कृष्ण ॥ अर्जुन क्षत्रित पर ।

कनिन कणाद व्या से से अ विवर ॥ स वि थे प्रि न प्रा ग में ॥

म हा भारत प र ना त हु ना ॥ आग दि पा कर ना स का ॥

पु र ख ता का कृष्ण न का ॥ भवतो दिव्यो ज्ञान में ॥

पु र ख तो ने पां वा न मा वा ॥ अमि कर्म सध मा र गि रा वा ।

मि न कु र ख न द ता ग मा स वा पा ॥ भारत के स म्मान में ॥

प्रथम म म न वि द्या ते नी ना ॥ को वि म्भ स म्पति न ल ही ना

ये र देश पु म ति ने नी ना ॥ आवे न हो न वा न में ॥

र पु न्दु म्भ म ति नि का र न दी जे ॥ विद्या पि द्वा र त में ही ने

सुत स न दिव्य शर शा में नी ने ॥ फं स र हा पु र व द्वा न में

सूत कर के वि वा य हां से ॥ पदुं नी इंगति ज्ञान में ।

वि वा य न थे सो नी नु है मि त को न भो र पु र सं ज्ञान न ता

दि न स क ता न मा है वां न र स क ता न य ता ग मा न क नी वि द्या ते

मनुष्य जन्म विना एक विशेष रूप है विदेश नन्म सदृश सहायिका
लगा देना तो भी देना प्रकृतियों की गुरु है विना सारा मनुष्य
सत्ताओं से गुन्तिन होता है अतः विना विद्विन्न रूप है सत्य है
कैसे तो ते भी अजीब कविता बना दी है । मनुष्य

कैसे तो विना विद्विन्न जो मनुष्य सत्यता पाए ।
विना की वृद्धि बढ़ावे, जो रविकारों में बढ़े

ज्ञान की यह भण्डार जो मनुष्य
विना है नर का रूप था, हृत्ती है यह सब बढ़ावा
मनुष्य में करो तो नार, जो नार

इन के नहिं तो रविकार, नहिं सजा मंद कश्यप
कैसे नहिं मनुष्य नार, जो मनुष्य

सजा तो विदेश तो वृद्धि विज्ञान जो कवि विद्विन्न
जो नहिं मनुष्य नार, जो मनुष्य

प्रकृतियों का भी यह गुरु है नर इस के विद्विन्न मनुष्य है
इसी जो नहिं नार, जो मनुष्य

यह जिन मनुष्य नार, जो मनुष्य
मनुष्य में सारा, जो मनुष्य

यह मनुष्य मनुष्य नार, जो मनुष्य
मुक्ति का नहिं नार, जो मनुष्य

विद्या की है यह माना दो पल्लव दृष्टा की काया ।

यनादि मेरे न बताए जो मुख ।

बहु मन मगधेन है नारी, मेले गले सौलव ताति ।

सींच कर हाथ पर पाए । जो मुख ।

गहने बिजय भांगि के कोश न है विद्या ही के फल । सब

जोने सब संसार जो मुख ।

कहे तातिम वन मदाओ भांगे को न ले वन ।

वेश माते उकार । जो मुख ॥

नमोरे हा संनय भाह भाग्यं, नरा न हार्य न धनार साते ।

जो पे कहे व धरि, रघु नित्य न विद्या धनं लगे । नमो भान मगधे ।

विज्ञाना मन रघु ह्यमधि कं प्रकृन्त गतं धनं ।

विद्या भोग क ही वरा, गुण कर विद्या गत सांसार ।

विद्या बन्धु नतो विद्या ग सने, विद्या परं देव नम ।

अन हरे । विद्या शान मुमुक्षित न विद्या न विद्या विद्या नम ।

मनु विद्या नम । नमो भान मगधे । नमो भान मगधे ।

विद्या नम । नमो भान मगधे । नमो भान मगधे ।

विद्योपदेशः । ह्यमोन संपत्ता विद्या नमो भान मगधे ।

विद्या शा गी । विद्या ही नान शो भनो । निगले दृष्टा दृष्टे का । १४१ ।

भा. ज. प्र. ब. न्धः । माते वरदा ति ति वहिते नि. यु. ने

कात्मेव चाभि. २. म. त. म. प. नी. म. र्वे. ६. म.

कीर्ति. मे. दि. शु. वि. म. त. नां. वि. त. गो. ति. ल. य. मी.

किं किं न साध. य. ति. क. ल्प. क. ते. व. वि. द्या ॥ २॥

हि. ती. वे. द. शा. मा. ता. श. नुः. वि. ता. वे. री. मे. व. वा. लो. न. पा. ठि. ताः.

न. श. मे. त. ते. सु. मा. भ. य. वे. हं. स. म. य. वे. व. नी. म. ता. ॥ ६ ॥

॥ ति. ला. श. म. स. प. २॥ २॥ स. प. २॥ वि. वे. प्र. ति. य. मे.

॥ म. का. हा. र्मा. म. र. द. ह. वे. ॥ हि. ती. ला. दि. प. ते. स. दा. ॥ ६ ॥

॥ म. दि. प्र. मा. णो. से. री. ॥ दु. या. म. वे. वि. ला. स. यो. नि. म. वि. न. र.

त. था. ॥ २॥ री. य. का. र्णो. की. र. क. ति. मा. मि. का. र्. ॥ ६ ॥

को. र्. ॥ वि. म. हा. श. य. क. मा. व. त. ना. ते. ॥ १ ॥

स. । मा. नु. स. म. र. शा. क. र. ति. पु. नि. पि. नु. स. र्. स. र्. दि. ॥ ६ ॥

म. न. दि. ॥ म. णो. स. म. र. शा. व. त. क. ल्प. त. क. ल्प. त. दा. यि. नी. ॥

भो. ग. य. श. सु. श्व. रा. ज. मा. न. सु. ना. न. दो. यो. व. न. स. दा.

ता. पि. नी. वि. ला. स. मा. न. न. मा. न. ज. ग. मे. को. र. को. ॥ ३ ॥

क. थं. ॥ वि. ला. द. दा. ति. वि. न. मं. वि. न. मं. दा. ति. क. न. ता. म.

वा. त. ला. ह. न. मा. प्रो. ति. ॥ ध. ना. ह. म. त. त. सु. म. म. ॥ ६ ॥

मु. खी. ते. ॥ हे. तो. वि. ला. य. दा. वि. ला. य. तो. व. त. स. ॥

सन्तानों १ ध्यान दे न स पितृदेवो भव इति सिद्धांत के
प्रति पालन क पितृभक्तों के और निहंरिगे जिनमे मुख्य
अवस्था क सा र शमनन्द भीष्म पितामह ये महा गुण
वीर्य के लोचने हैं और पितृ मुख्य के लिये चोरतप
२-४ वा और कष्ट साधन करते हैं।

दे लिये श्रवण व नी पिता माता के अन्धानुर करने के
लिये कणा २ पुत्रि और कष्ट का अग्रभव दिना है
मुझ पर चह वादलु लिये आकृत के वना के
शुलभ भाग में मेरीने ग और माता पिता के
वतला के कोई ओ बलि हो गि को नैन दो.
उपकार हो गि आ पका अन्धों को नैन दो.
वाप में न सिद्ध जो ते अवस्था के माता और पिता
के भली होने का कारण बताया और आशीर्वाद
दिना कि जिन की कृपा से नूतन भीषण तपे जाते हैं
जिन की दया के पूगे भी भावना सुनाते हैं
वर्तमान को पतन मान में शरीर बनाते हैं
मोदीन की पुकार को सुन दौड़े आते हैं
तनदिते हैं जो गल्लु को जो भक्तों के वा लो

आं वे भी वही देते हैं अन्धों के नास्ते ॥ १ ॥
इस प्रकार की आशंसीन सुन कर भुवना देवजी
कहते हैं । अब मैं मात पिता को जोकर बहुत ना सुनाऊंगा
और पति शाप देकर ताड़ूं सोरे तीर्थ कराऊंगा
पर प्रतिज्ञा सुन भुवना की दशरथ महा राजा कहते हैं
कि अन्धे सांता पिता को कैसे तीर्थ करि दोगे -
उहो तब है कि । उत म पवित्र की काव की कांवर ना ऊंगा
ठाकुर की तर । उनको मैं इसमें बिना दूंगा
भ्रष्टा के साथ फिर मैं कांवर उठाऊंगा ।
अन्धे दे अपने मात पिता को चढ़ाऊंगा ॥
ले जाऊंगा वस इस तरहू तीर्थ के कार पर ।
जो का गृह पा रहे तो प्रभु के आचार पर ॥
पूनी कृत को रत पर की मात पिता का सुन कर भुवना
जीवत लाते हैं कि आज मैं चढ़वत ना दूंगा कि संसार में
पित म कि मात म कि ना उठा दूराग यह है ॥
जो जीभ न ना म जपे उन का तो जीभ को खींच निकालूं मैं
जो हाथ न सेवा करे उन की तो हाथ भी काट के डालूं मैं ॥
और जो न मुँह के पद में उत के तो पाइ से ताहि उठा दूं मैं

जिन नैन दि मे इस जीवन पर रहने न उन्हे पर वास मैं ॥३॥

ध्यान न मन महान पुन मे कहते हैं कि ।

अंग ग्रीष्म है अन्ध दशा है केश सजे ददिवामर है ।

बैठे उल्लेख सन रहे हैं बहु विधि रोग सता पर है ॥

प्राण बल क से पित्र मे मोक्ष के वो न सुना पर है ।

निर्ध के तीर मे जाये मे के दि विधि कर और कां वं का पर है ।

पिता की ग ह नात सुन कर भवसा देव जी उतरते हैं

हानिर है सब शरीर सह सेवा के वास्ते ।

बलिदान पुन है पिता माता के वास्ते ॥

कन्धे पे हो जो कां वं की और कां वं की पर धाम ।

ले जाऊंगा मे इस तर ह मा भा के वास्ते ॥

मन न मा नार हो भक्ति पिता माता की ॥

मे र हो न मले सेवा मे नम दफा न्ये ॥

माता का पुन पर जिस प्रकार का पे मर हा है इस बात को जानो है

माता को देखो ने पर व ह के सा ला ड न डती है ।

नवमास गर्भ मे र नती है और अपना दुध पिलाती है ।

खुद तो सोती है नीले में लू वि पर उसे सुलाती है ।

मन पून सदा भीती उस की बलि हारी उस पे जाती है ।

ऐसी माता को जाने जो बह पुन नरक का गाना गी है।
बह पुन नरक पुन नरक है बह पुन ही दुख दुख सी है ॥

दोहा

मेव न सौ भी होय तो, जावन ही सताव।
कुन ही नरक नरक पुन मे सुख पाये मां नाव ॥ १ ॥
पुन ही करता है सदा, सेवा और सत्ता न।
मर जाने पर पुन ही देता है जल दा न ॥ २ ॥

अवसाव देव की मुकुमारता देख कर वसो पस सत्ता नरक नही है।
परिधम जव वहुत होगा तो हिममत दूना प्रेमी।
सि पि लजव अंगले वेगे तो अंधर दूर जानेगी ॥

श्री का-उ। राजव हे आकाश से पृथ्वी नीचे उतर आए।
पृथ्वी नीचे ही शेष के सत्ता से स्थिर नरक जाव ॥

बादल न हे पानी की जग दूआ ग के लसाव।
भूदमा हो संसाद में पाये दूग मुग क ॥

पुनि मा की सव वलाये मेरे सरव दूतां प।
आंवर न ही दुष्टी चहे प्राप्ता दूतां प ॥

तीर्थ मे माता पिता के बहुत समकाल पर भी भवत
देव की नाना लोके हैं यदि पुनि मा में सव मिलता है परमात्मा पर
मिलता।

मिले नदर थकार मिले संवक मुत नारी

मिले भू मिलन का म अश्व गज का पिसवारी

अकवाती वेद मिले मिले सम्पत्ती सारी

रेखा सुन्दर नदी नही मिलती महलारी

ब्रह्मा विष्णु महेश भीत वरुन से आ मिले

रेखा उतम सप्तम तो नार नार दि रना मिले

१५ का. क. क. । जानी है गुण और शक्त की दशा भेद ।

जानी नाना भांती नदी नाल सि दिखाने

जानी है वणिज का नारी शोचनी सारी

जानी अति नार प्रेम मरी सु दु नाली है

जानी है प्रवन्ध कलाना लक्ष्मी कलाना लक्ष्मी

जानी सा मना मंदं भेदनी कहानी है

जो स ८ कला जानी नरु देश विद्या जानी

पितर म कि जानी न तो दशा निदानी है

शुभा कुसा र का कु सु मान और पितर भक्ति पर शान

नैद और सती का कु सु विष म अं वि त नर अम म हा गानी

महा गनी म म म म नी नी पितर म कि दिखाने में जिहो

पितर नी का का मान मुख आनन्द को कात मार भौद हव

नंगल में मही नंद व सहाय जिन का नाम मौर मन्त्र है ^{हृतिप्रयोग}
 वही है सबसे ऊंचा ज्ञान पिता माता ही हैं भगवान
 माता जोरी का रूप है । पिता शंकर का स्वरूप है माने नंद प्रमाण ।
 अवतार तीरथ योग यज्ञोक्त मात पिता में जान
 प्रेम से पूजन करि मे माने नंद नंद ही है ^{कल्याण} माता ।
 सा नंद शंकर के कुल जात करने पर प्रमाण का उत्तर

दोहा
 कोई चाहे धनं माल को, कोई चाहे सुख साज ।
 कोई चाहे संसार में, तीनों लोक का राज ॥
 मो गी जाहे मोक्ष को, मा नीं चाहे मान ।
 भवसा दास के लुप म मे, मात पिता का ध्यान ॥ २॥
 जान ॥ १॥

अगर इस स्वाक्ष के गूते गने तो खाल हा कि रहै ।
 अगर इस को ख का प्रमाण ने तो को ख शक्ति है ।
 प्रेती र ग २ प्रेती न स २ सभी नलि हार नून पर है ।
 पिता माता की सेवा में प्रेम जीवन निहावर है ।
 मैं हन का मी ना न न और त ह प्रेम धर्म पिता ।
 मैं हन की आत मा र और म ह प्रेती मा मा है ।

मातरं पितरं चैव सा ध्यात्वात्मनश्चरेत्॥

मन्त्रा गृहीतानि सेवेत ॥ मन्त्रा सप्त प्रयत्नतः ॥ ११॥ मन्त्रः

मन्मादापिताशैवेन्द्रां । तद्देवं संभवी नृणां ॥

न १ तस्य निष्कृतिः शक्या अर्थात् शक्यं तस्य ॥३॥

पिता धर्मः पिता कर्म स्वर्गः पिता ही परमं तव ।

मित्रि प्रीतिमायने .. प्रीतने सर्व देवता ॥ ३॥

दितः लक्ष्मि-कामा गति-प्राप्तये ॥

अतो हि निबलो देवनासी मां तस्यो गुरुः ॥४॥

नदका प्रमाण । मातृ ६ वा मन्त्रादि देवा मन्त्र

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

देखिये सव सुख नाश कर पितृकाशा मान कर नीनीक व सहाई

अन पिताम स्व ५३ पर श्रीम जीने आप का जीवन नि दान र मदी का है

राश राज निवो श्री दं : वचनं मेनुपुत्रम्

श्रुत्वा भूमिपालानां. तदानीं निःश्रुते ॥१॥

राज्यं तावत्पूर्वं प्रेष, स पात्यन्तं नराधिप ।

अपत्त हेतोः पित्र, कश्चित्पुत्र विनिश्चयः ॥२॥

अथ प्रथमं विवेकशः, एतन्मयं विवेकं ॥

परिचयने यं गौलाकं रात्र्यं देवेषु वापुनः

यदि वा प्यधिक मेता भूतं ननु सर्वं न्यदायन ॥३॥

दोहा

सिन्धु चले मरगा दु तजि. उने है भवमि भनता
लो लो नयन श्री भीम को. सोनहि व हुने र र न

सने गा

चले शेष ओले मही मेरु हलै महारु को ती सरने ग सुलै ।
चहुं ओर तोपै चले वाग कहे कका कोर शम शेर की मार कोने ॥
उठै रुण्ड भू में पदै मुण्ड लोहै भदै कुण्ड लोहै व है कीर डोने ।
चले प्राण जाये कहे गात सोर र है नैन ते ता ने भीष मउ नोहै ॥

द्वन्द्व

आज जो प्रभुहि न शरग गहा ऊं

तो लाजों गंगाजननि को शान्त नु सुन न कहा ऊं ॥

शरभन तोड़ महारणी साहू कपि धन सहित मिसर

पाणवसेन समेत सारथी श्रेणीत सिन्धु व हाऊं ॥३॥

जीवो तो प्रशले के न गत में जीत निशान दिशऊं

मरी तो मन्दिर भेद भानु को सुरप्रद जाप व साऊं । गान

इतनी सवण कसों प्रभु प्रसी क्षत्रिय गति नहि पाऊं

सूरशपा मरणा विजय सभा को जियत न पीठ दिखाऊं । भाग

सन्ध्या कराना द्विजों का मस्तकस्पर्श

श्लो. १ निप्रो व प्रो मूल का मस्तक स्पर्शः ।

वेदाः शाखा च मीनमोक्षि पत्रम् ॥

तस्मान्मूलं गच्छतो रक्षणी पुं॥

द्विजे मूले नैव पत्रं न शाखाः ॥१॥

व्या. १॥ सन्ध्या मे न न नि जाता , सन्ध्या मे न नु मातिता ।

जीव द्विजे भवेच्छ्रद्धा मतः श्वानैव तापते ॥२॥

तस्मान्नितां प्रकर्तव्यं , सन्ध्या तासन मुत मस ।

तस्मादेव कर्मोद्देशेन विहारी भवेन्नहि ॥३॥

म. १॥ सन्ध्यां जपन तिष्ठत् ता विनि मा क द्यन्तिता ।

पश्चि मानु समा सीतो ॥ सम्यक् निभाननात् ॥४॥

पूर्व सन्ध्यां जपन तिष्ठन्नैव मेनो व्यसो हति ।

पश्चि मानु समा सीतो ॥ मूलं हनि दिवा कृतम् ॥५॥

नानु तिष्ठति पः पूर्वो नो वा सो पृथक् पश्चि मा म ।

सुश्रुत एव हि भाषः ॥ सर्वस्मां द्विज कर्मणे ॥६॥

मूलक मूल में भी सन्ध्या करके निजी दक्षिण कर्ण पर परितोष में करके नानु पांके

मूल के निष्कर्ष तिष्ठित के गह्वरे नि सन्ध्या कराना तस्मात् भी अधिना तभी निमित्त

पर सन्ध्या निमित्त ही है कि श्वी संवत् करके दुर्बुद्ध मस्तक स्पर्श करके निजना मानने

पारिभाषिक में इस विषय पर दोनों निमित्त विषय ग पा है कि ।

मृतके मृतके नु मति, प्राणा आसु म मन्त्रम ।

तथा मर्तिन मन्त्रं मृ, मन्त्रोच्चारणं मर्तिनो ॥१॥

गामर्तिं सम्प्रुधा मर्ति, मृत्तिका मर्ति निवेदयेत् ।

मर्तिनस्त नवा मर्ति, उपस्थानं न चैव लेति ॥२॥

उपस्थानं दर्शना मृत्तिका मर्तिनिवेदितं ॥

मृत्तिका मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनी मर्तिनिवेदितं ॥

देवोदात्तः सर्व आर्तिनिवेदितं ॥ विनिवेदितः प्रकीर्तितः ॥३॥

ओम्कारं पूर्वं मर्तिनिवेदितं ॥ मृत्तिका मर्तिनिवेदितं ॥

गामर्तिं प्रणवश्चान्ते ॥ तन्मन्त्रेण मर्तिनिवेदितं ॥४॥

शतमन्त्रा विषयं मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मनुः । मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मर्तिनिवेदितं ॥ मर्तिनिवेदितं ॥

मोडव मन्नेत ते प्रणे . हेनुशास्त्राश्रमाद्विजः ॥
 सः साधु मि व हिकायो न नाति को नेद निन्दकः ॥४॥
 उपनि रेव विप्रस्य . प्रती धर्मस्य शास्त्रवतिः
 सहि धर्मा धि सुवर्णे ॥ ब्रह्मप्राप कल्पते ॥५॥
 इमं मनु नावस स पदसिद्ध दु भाजि ब्राह्मण धर्मो पदेश
 करने के ही लिये तद्विद्या एका प्रचार करने के ही लिये
 संसार में भेजे गये हैं । अतः तुलसी दास ने भी अपने
 समायण में इन के मोहन नीत धारण नाना प्रकार से
 देखिये । जो । वन्दौ प्रथम प्रेम एव एता .

जो एजानीत संशय सब हटना ॥५॥

पर हा पद न की दशा आज निरवते दुपे मै प्रीति शरणागुप्तन्या
 बतलाते हैं । उन अमरनाम ब्राह्मणों की हीनता तो देख लो ।

भूदेव भे जो भाज उन की दीनता तो देख लो ॥
 भेन ह्य प्रीति प पा ध जो भव सुख न डता पद दुपे ।
 जो नीर भे देखो वह मिश्री व व की खि दुपे ॥
 व हने दका पदना पदना भवत उन मे दीखता ।
 व ह पदना क दना क एता कौन उन में सीखता ॥
 व ह पद को ही आज उन मे दान देना रह गया ।

है कम उन में सकल अलंकार रह गया
कुछ ही दो नो पा र ज कि फिर नै गणक पुंगव न गये ।
मन्त्राङ्ग पङ्कज और सप्त रश्मि में सन गये ॥
संकल्प तर्क भी भुङ्गे साक्षना कह सकते न हों ।
ते पल्लव भावे पाद पङ्कज किन्तु रह सकते न हों ॥
संदेह है गणक सप्त पङ्कजा मंत्र पते मौन ने ।
है ओं नमः का हा ॥ निमन्त्रणा पाठ करते मौन ने ॥
त्रिप्रेत दृगन्तर कर ने लीन हैं भगवान में ।
मा दक्षिणा की मन्त्र मुद्रा देखते हैं ध्यान में ॥
निन दक्षिणा लोने लोभ को तनत तिरस्कृत्य किंवा
देखो उन्ही के वंश जो को आनन्द से सहायिणा ॥
अब आप उन की दक्षिणा कहने विपत कर दिजिये ।
किर निज से ति क उन से का म कहना जितिये ॥
आया उन का आज केवल रंग प भक्तान में ।
जपत पत पावते ज अक्ष है शेषना हा निज में ॥
वे भक्त मन्त्रि हो रहे हैं इन्द्र के आशान में ।
जाते मरे हैं किन्तु फिर भी वंश के अभिमान में ॥
आ हा प निन के पुत्रि जो ने भक्त धरणीतन दिमा ।

इस जो न की पर जो न की प्रभता व जो न की हन निगा ॥

तनी न दे जो आन ने दे से नि रस्कृत हो रहे ।

जो कर तपो व न सा न व न जो ते दुगे म न हो रहे है
इस का र सा न ग है अश्रितता नि स से हन की पे नुं भा हो ती है

नि ना

ने स न अ जो का के नु क न है वा स है नि स का ग ह ।

अ वा म वि नु ना भ व न वा । आन व हं ग र व न हं

वि ना र है ह म जो न के है अ न भ व ना श न भी ।

जो कर स भी न हं अ न त पे जो आ स स व न मा न भी ॥

हा । सै न दे जो के प हं व श भी सु श्रि क्षि त है न ही ।

हा । ना ह नु जि तो न की क हीं ले तो वि नं न स व क हीं ॥

ह न भा ग्य भा र त जो क भी ग र व न स वृ नि त र ते ।

कर ती व व न पे भ व ता स न न न अ व नै स न ही ॥

हा ई भ नि ता की नि शा है ह म नि शा ग हो रहे ।

हा । आ न श ना भा व से नी भ व र स पे स न रहे ।

हे ग म ह स का वि भू मि का उ द्गा र न्पा हो ना न हीं

ह म म र क ता क र आ प का प्र व ता र न्पा हो गा न हीं ॥

नि ना नि ना अ व दे न जो . ह म नु नं तो न का स है ।

हैं मनुज हय कि नु र हते दनुज ता के पात हैं ॥

नाम त था ना ये सदा स ह म र ह मोर वा र है ।

अविचार अ भार है अभिचार अ वा चार है ॥

हा । पादत म र त म सा र ल से आ ज ह म आ चू न है ।

ऐसे विपन्न दु पे कि प्रम स न भों ती म रणा स न है ॥

हम जो हरे खाते पे भी हो श में आते नहीं ।

जड़ हो ग ते से ते कि कू भी जो श में आते नहीं ॥

हा । हा । जो अग जन्मा थे जिन के पू ने पू ने ज ने ला ल -

व शी आधा लि न त न वे ता थे जिन के अ म ज पा त ग

आ आश मंडन में पू य व त वि न ग्री त न भा य मु लि ने त हो

उन की प र पुं व त सारे आ ल न आ लि ह स प्र का र ती प्र स

वे द न जा ते पु मे भी व हो श न न से आ ती न त भ व ती पू ने र ता य र

गौर क र वि चार क र सो च ओ र स मं भ न ही तो न र वा मि री है

जा ति के नि स य में भ ग मी ग न न न के सं न र में भू ग ने सा ग य क न

कि स जा ति की उ न वि न ह ने है म हा भा र त आ जि व र में स व न दि न

इ स प र आ ग य ल न ने उ न र दि न कि । सो

न वि से वो ऽ स्ति व शी नां । स री वा हा म पं ज ग त

ध्रु व ता पू र स हं हि ॥ क म मि ने त तां ग त म ॥ १ ॥

सनातन धर्मोपदेशक श्रीमत्तेजशंकराचार्यनारायणोक्तिसुप्रसिद्ध

✓ 36 जीनींद के माते ह्माति 36 दशा देखो.

प्रथम २ संदेशों आगे, हमें भूति आने का वे.

हमी कि ज राजक हलागे, हमारी भव दशा देखो...

अथ विद्वत्साधनेन वाच्यते . . . यमः का साह कर्तुं भवति .

हो अवभिना मज्झिमा निपाय १२० वें पत्रे.

हमारे हृदय में आता है, प्रसादों के हमारे हृदय में आता है।

हमिं रवि का वा दशमेति, हमाति भव दशादेखा.

कला विद्या को बढ़ाते थे, विमानों को बनाते थे.

उंडा आत्मशान्ति आते ॥ हमारे मन दशाते हो ॥

हमारे पास आते थे. हमीं का निवास न ताते था.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ इति श्री गणेशपूजा

सकल विद्या से भूषित हो, सकल दुर्तियों से रहित हो,

जगद विख्यात कहलाते, हमारी अब देश देखो...

सुनें जगज्जगत्समा, किं आये हार द्विगता...

लिहावन छोड़कर आते, हमारी अब देश देखो...

प्रथम भूषा न देखे, तो हार उभरने लगे...

हो अब तो भी लान हीं लाते, हमारी अब देश देखो...

निमग्न लाली जो सुधि पावे, तो हार के जगत्समा...

दौड़ दशा जो शान्ति आते, हमारी अब देश देखो...

सुनो जी से वचन पावों, सगे जी सा दुःख न को...

उहो अब नय के नाते, हमारी अब देश देखो...

समस्त गजो निमग्न लाली मुसकान भीत न था कभी...

तेरे तो शोभा के निहार दे मे अब को लाकर लानो देखे...

हुं मे परान को महा श्रुति सम अते, तेरे उन की ललान तो महारा...

श्लो २५

शब्द की शब्द मात्रे ता, किं मूर तो जगत्समा...

ध्यान तो ब्राह्मणः तने, हा शब्द नि शब्द निः...

वज्र ही उलझे ता है निगजगद्देवि मे निमग्न लाली...

नत लाते हैं आंखें उठाओ खे, ब्राह्मण दे खोले लानी...

श्लोकः

नि प्राः शुद्ध समाचारः । सन्धानाद्यनवर्जिताः ।
शुद्धा न भोजिनः शूराः । वृषजीरति का गुणाः ॥१॥
ता एवान्ति धनयोगेन । स्वकाराजीयतातिगः ॥
जो दहे न सी दासने तो दूद से का दि गोहे ॥

चौपाई

हि जगु ति वं नक रूप प्रजापत । जो नूहि मान निमम च न शासन
विपनि रक्षा रत्नो नव न सी । निराचार शास्त्र व नी ह्या मो
सुप रे आचार । नेरी पद दशा म हों दू सव जाति हो र मोर
तथा सव वे भे व नी व हों नेरी से सी दशा । जोर सी ना ज नी गणा ता श्रमे
अन जा । न व ल क्षाणि । ह्या व रा । न क्षा वि शंति
कृ मी ति दू न क्षाणि । पक्षि नं दशा ल क्षा नाः ॥१॥
निशंल क्षाणि पक्षव स्वरा ल क्षाणि मान नाः ॥
पद हन सव में श्रेष्ठ ता अन की न म नु भ ग ना न जो ति गोहे श्लोक
भूता नां प्राणिनः श्रेष्ठः । प्राणि नां बुद्धि नी विनः ।
बुद्धि म सु स न रा शी दू । नैरेष आल नाः स्मृतः ॥१॥
आल ने व न वि क्षा नः । वि ह न क वृ द्ध मः ।
क वृ द्धि सा क्षाणि । कर्त वृ क्ष म नी र्ति ॥१॥

पर दुःख है कि ने लोभ ता श से ग सित हो इ-ना ५ मं, इ-ना ५ पं इ-ना ५
पर मं पं के मं नने गली ५ गली मोरे कि रते ग ५ मं स मं फते गी
लोभ फित गी ५ गी ५ स है ५ गी ५ कृपा भजे न को न पा वत जाते है

नि नि नं न न न न नं ५ त रं नो श न मात्मनः

का म को न स ता नो म स स्मा देत न गं त्यजेत ॥ ५५ ॥

आनन्द से न लो बी व न ग न ५ क म ५ अ न्ना है व न लो न लो न्या गो ।

आनन्द क न्द भ ग नान श्री कृष्ण चन्द ने गीता में भुजुन से न्या क हो है
श मो द पः त पः शो नं ५ क्वा नो राज व से न च ।

ज्ञान नि ज्ञान मास्ति नयं, ब्रह्म कर्म स्वभाव जय ॥

सन्ध्या स्नानं जपो हो मोः देवताना म् ५ पूजनम् ।

आति नं लो ५ देव न्ना ५ न ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

ज मं (५ अ न्ना प नं ५ अ न्ना प नं ५ ग ज नं ५ ग ज नं ५ त न्या

न नं व्रति म ह्म न्ने व त ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

शाला में स ह्म न्ने व त ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

मि न ५ आति नं लो ५ देव न्ना ५ न ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

म स न ५ न ५ स म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

श क्क न र्जि व न के ५ र ने ५ अ न्ना के ५ र ने ५ म न त में लो न्या है नि

आन लो ५ स म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

५ इ न्द त द ह्य न ह्म न्ने व त ५ क म्मा गि दिने दिने ॥ ५ क म्मा गि दिने दिने ॥

५३ ति के उपर मलमज गुणि फिर को मी कपिता मही उपदेश। श्लोक

पुन हरे सुमै प्रभेन , विप्रकल्प भुनेन वा।

मानस्य मनने कृते ॥ धृतिः भूयस्करो नृप ॥१५॥

ह गुणि फिर ली पुन को भाविकों के मुख से रहित होने पर और मन के
भावाव में कृति न कृति न भावति में पड़े हुए प्रत्यक्ष के शब्द अति ली
ही अर्थात् जो जो ही मुख का देने वाला है मिसाल होता मन्त्रकी
प्रत्यक्ष के निवेदन मा भी धर्म का उत्तर अंग है मूल धर्माति न होने पर
जर से हो दे विगे व हृत्पति जीने क्षमा काल क्षमा में कि पा है
वालोना भवन्तरे नैन , पुःखे चोत्पत्ति के कचित ।

न कृत्वा तिनवाहन्ति ॥ साध मापरी कीति तो ॥१॥

संभोगों के विगे शाक्तानां भूवर्ण कृमा इत्यादि माने है

इस का उदाहरण मलमजि जैपरी जी है अंशवत्ताता
के लपर मल भारत के लश है में कितना क्षमा कि पा है
किती के भनने ले की आनं क्षान कते भुति का प्रमाण

मा गृधः कस्पे स्वि द धन म कि ती के भनने ले की इच्छा न करे
श्री नन्दावनतरा म । अदभि गी भाणि शुद्धाणि मनः सन्नेन शुद्धयति ।

नि कात तो भां भूतामा , अदि शीनेन शुद्धयति ॥१॥

क्षान्त्वा शुद्धयति विद्वान्शो , दानेन कार्त्तकारिणः ॥

2

Figure 1

21/21

॥ ॥

56

100

22-721

629

22

...

15



दो वही के बिहारी के कारण से दुखी बन सौ भाई से मत वागवता
 भोका भिगम सह से से जान बल बल से काहुत भा निवाना समा हो मत -
 पादि इत्यादि विदिते से भवतु अतः मीरजे अतः परदा लभ्यत वतवतो ।
 पांभीन कोहन-विक-तेगों को परदा रमे नैसी दुखि थी नोइ भवते सो
 १ इत्यादि अन्तमन्त्र द्वारा अन्तिम करवैगे ॥

(25.05.05)

मालव की जीति भी अंगी न होती है अंग महं रसना न
कुछ निचार करेगे । शनदा की (सवै गा)
मूढ न जानत मूढ के संगत का गनना नत जानी दही है
मृग न जानत शनि के बांलक आग न जानत द्वाहन रहै
हिज शन जानत कामि ति के रस न भिषन जानत तान सही है
बाल के भीत पराहित के अंग ओहित कीति कहें जिव ही है
बाजे बल बाजी हाथ बाजे वन गारे साय बाजे बल कहरु दार
खेत जोत रहि ये .

बाजे बल पुड़ी नोमि सई की मेन ती कौन बाजे बल बुरि
की बुद्धि निचा रहि ये .

बाजे बल शाला जो दुशना की छेत नगे बाजे बल
कमरा के दूध ओ रहि ये .

बाजे बल दुकुन ओ हादि महारां ये .

बाजे बल मूति गो के लाय वात सहि ये .

ये दाहि मे नहि मत विचारि न नहि नाग जाहि विधि .

राखे रास वाहि विधि रहि मे .

मैला बंरु चित भूमे , मै भूने . शौर क नीलि .

प्रायः दानं न करीये . ताव अष्टाल मुच्यते ॥१॥

मनुष्य प्रत्येक का मोक्षोत्पन्न करता है परन्तु मोक्षोत्पन्न
देखि मे भगवन् दिग्विद्या कहते हैं

शान्तं न ह्यस्य गच्छेत्तु मृतं वा तं न संतोषतः
 ज्ञेयं तद्वत् शीतं वा तत्तपनाः केनान्न तत्तपः
 व्याप्तं विश मृतं निशं ज्ञेयं तत्तपनाः केनान्न तत्तपः
 तत्तपः मृतं निशं ज्ञेयं तत्तपनाः केनान्न तत्तपः
 मृतं निशं ज्ञेयं तत्तपनाः केनान्न तत्तपः

संज्ञा लक्षणं यद्वा नि मन्त्रादिनीच.

हि स्था न गान्धर्विणा मे पशवन्त्याः॥

निष्कम्भं वा मृगं निष्कम्भं वा मृगं वा ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

महामहोपाध्याय केन्द्र और डा. बा. प. प. प.

हानाति किं माश्च नः कृ. न. भाग २५ मो. १० ॥

इति श्री गुरुदेव प्रसाद. पुराणिनामिनेऽनुवाकः ॥

५. अमरी नारी का उचित विचार प्रामाणिक

तत्रैव प्रतिष्ठिताऽहं ततो नि नि तानि ज्ञेयानि यस्यानः

प्रभातं, अस्मिन्निदितां प्रहणं. महाभोगे येन मंत्रस्तथा

अहंमहिनि प्रगानि प्रकानि प म मनिरे.

प्रोधाः स्थावर मिच्छन्ति , किं माय च मितः परम ॥ २॥

किं तदप्युच्यते मागे , शक्तं तच्च तिम्रं गृहे ,

अनं जीवा प्रजासो यः सत्त्वादि चर मोदते ॥ ३॥

कथं तावत्संज्ञानं जीन दिना न दिना ५२ स समस्तान्मा उन्नत
प्रचलिते दृष्टं कथं च पश्येत् ५३ दिना निधादित न मीनि
न दृष्टो गन मेरु सावित्र भेजनीन दिना न दिना ५४ ॥ १॥ वंदिता

सुखं गतं न गच्छन् मुक्त मनीरे , निज सुखाय तिलोक्तं यत्रोदता ॥

समयं तस्मै प्राप्ता स पातया , नर न नीन दिना न दिना ५५ ॥ २॥ पत्नी ॥

वदं विना दनु मेव विदारसां कृत मदे निन सता दता मुनः ॥

न शक्तिर्न न न मोन न मो गणः न न नीन दिना न दिना ५६ ॥ ३॥ पुनः

रेति विनं यदि प्राप्ता य मभुं नं निज पतिः प्रतीत्य ल पयोधते ॥

प्रपत्ते प्रनेन न न न दुःखतां , न न नीन दिना न दिना ५७ ॥ ४॥ साक्षात्

स्था सा सा र कुरे प्राप्ती लो ना ना सा र म दीवतेः ॥

या नी विन वितो येन , मुक्तं तेनैव सा रितं ॥ ५॥

वदं विन वि को प्राप्ति , अर न्तां नैव म च्यति ॥

समयं तस्मै प्राप्ता स पातया , नर न नीन दिना न दिना ५८ ॥ २॥

वदं विन वि को प्राप्ति , अर न्तां नैव म च्यति ॥

रा. ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ३ ॥

आदिनाम कीर्तन ॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

गदिभी म म हि कने ॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

अस मस्य स मस्या ॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

मि. ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

॥ ॥ ४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ४ ॥

कोशस्थितिः भवान् जनिताः सीतान्तानिजितः ।

शिरःप्रकिटयेन सानुन मत्तप्रपन्नादिमिदं जनिताः ।

संसाधकं निराववादनवद्व्यापामिनामद्वयम् ॥

प्रसादभातिन सत्कलानि कृतं श्रीमत्तुल्यप्रसन्नः ॥ ४॥

स्वस्ती स्वागतमर्थदिवद्विभो किं विमता मेदिनीम् ।

आमाभममविभ्रममेवद्वद्वतं यत्तिनं मत्तम् ॥

मदिदिनं यत्तु कृतोद्विद्वयं पातं किमिदं मत्तम् ॥

इदं मत्तं निनाचिनः शतमत्तं वा वाद्वतं सत्तं मत्तम् ॥ ५॥

अद्वयं मुनिनामिदं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

अद्विनिनी मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

अद्विनिनी मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं मत्तं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथैवमेव वसन्तः शान्तमगच्छति ॥

माताः १ माता स न द रु द्वा न जिते.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

तिसप्तममनुयायो मही

आपणालि कशांग होना ताहे उरत प्रमये दया ना लाड

इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

संज्ञा सञ्ज्ञः सन्दः सोऽहं परम . नैता उपनाम ५ ॥ १॥

स्न १२ अथ विष्णु संप्रदायः सनातनोऽयं तावदुमाः ॥

मशवर्तुः मशवर्तुः मशवर्तुः मशवर्तुः मशवर्तुः

१३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

इति च पं नानि शक्यम्, हस्तिनी विद्व स्यात्पुनरिति ॥१॥

उस समय उस मनुष्य को पुनः शक्ति काभी उपभोग नहीं हुआ

सीतप्रहिकानाजकाहिकाना. निगडे उ. फ. त. क. गी. न. म. र. ना.

पुनः प्रसन्नो भवति तदा सांख्ये ह्यपरे ह्युक्तं मेन्द्रगीतम् ।

हमारी प्रेमात प्रसन्न हो जाय. तो नारद भंडू कहते जाना ॥ १ ॥

श्रीगुरुदेवाय नमः । कतिहमरीहं सोन-काव

दासं मणि काय न मेक सुने जागे निमज्जानि न निमज्जानि
 मणि व ति व लणि निरेक सुने अनां गुणनं प्रयत्नमाह ॥
 कसेक नक मणि पारिजत गोमे, पुसुन गेखि महि मयम सुटोने ॥
 मया व गुणिः कनकं वरी वृत्ते, निदलसि विदल तापता ॥
 तया गुणिः पुसुनः मरी वृत्ते, जागे वरति तेन गुणेन कर्ममा ॥
 अना उठा मक हो पता रोमी,
 मयं सवंगुनः स मं, अजगु आ म पोहोते,
 न ने सव पदं गोमं न देव, केवा म पदं म नम ॥
 मिकुत मनाम कि ये अ व नोते
 मकुरे म प्रयत्नाय, तया जो ति व पा वने ॥
 अ मं वं स र अने गो, ददामो तत वतं प्रमाणा ॥
 न म्हा ईश आमी न जग, को दु न रे व गो मे ॥
 देना चीनं म म, सवं म मक मे अ म्हा म्हा ॥
 हां गो म म्हा नि को म म्हा ॥ न म्हा देना, परं व न म्हा ॥
 वादिन स न वि न्नु भूमन भार
 न ल हीन म तं कारं वत हीन म म्हा न म्हा ॥
 म ति हीन म म्हा न म्हा, नि पा म्हा म्हा म्हा ॥
 नि न हि वि प्रव कर वर स म्हा ॥ म म्हा म्हा म्हा म्हा ॥

कनकरसदृशमणिकेन युवनननेमानसावाकनमः

सुप्रमत्तिपुत्रमवाप सानपातेसरासीदेवी ॥१॥

मंनसमजितमपहीनुष्टमः

काप्रकोपमदमाननेमोहा, लोभनकोमनमगने ॥१॥

जिनकेकपयदंमनहिमापा, निहृदिकेननसदुष्टुशपा ॥२॥

सकतजिनुमहिरेकेकवलाह, ताकेकव्यनसदुष्टुशपा ॥३॥

कनरुप्रभाप्रमामाप्रतामेभीमेमाहीहै

नमंनजापकोमस्तु, कोमप्रदुरतांमता

सोतापासरासम, तसपदुष्टुमन्दिमपा

सप्रभावादिनिगन्ते, देहप्रयतिनामनि

मंसादमेनिगुक्तसमतेमानसंगहम ॥४॥

नमिदममनोनुहिनीःसनुदःसदामित

तेमिसन्नाककमिगस्तमनसोप्रमंमहम ॥५॥

नहिप्रभाप्रदुष्टुननिपु, मिमभरेशिप्तेनसतेह

~~ममिने~~ यनितनपनोवनसजन, पनक्रियन्वितादेहमा

अन्नामागमापता

सोतनपतिताहो, माभाहनवसदम

दुःखनदमनना, समंविनिवदेहेलो ॥६॥

[illegible]

जैसे भी पढ़ने वाले छात्रों की दुर्गति और उनके माइनों में उद्वेग

है निम्नलिखित प्रश्नों में नहिं काज है ।

नर काय की गुडि माहरे हम भवन इस के पावले ॥

नैरे कुमेरे छुड़ावा मे माहरे महावा ग जागले ।

नहिं दाहक कानो मे यो जरा से को न मेरे जागले ॥

दोहे मुझ के जाने कोने, नहा सा शा तो धनदा गवा ।

गी हा स नीशु क नो ग क य बाजे न कर रह गवा ॥

मुख क को मनदा करे न पर डर भाव नु भी पर गये ।

अब गावो गांव के न गे ने को न मे मे गये ॥

ने हा मे मे मे रा र नि पर हा म काहन कर दिवा ।

कि र ना मे के आगे हमारे जान का देन कर दिवा ॥

ति स पर भी दुःख न की न भी, दुःख को को लेने को है ।

हम न के आगे र मे डी देन गी लेने को है ॥

हेड माहरे के पहा के निड, कभी भी ले न गो ।

छिन जा वं गी न मरे सभी नं दो पि पाह हो पगे ॥

से न भी मे दे गे वही दुःख हा से न गे भी न न

दे न के ते पाहरे न ले पि पाह जो क हो

मगल न को द सा न र हम द सा न से न न न न न ॥

कि र भी न ले न भी न हिं न न कर, दुःख न न न न न न न

यदि अगस्त हो नही, फलित मन्त्रों को पढ़ो ।

महि माता मे उत्तम मे नमो नमो मे नमो नमो

ਜਿਹੜੀ ਧਰਮ ਦੇ ਸੇਵਕਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਿਕ ਨਦੀ ਦੁਆਰਾ ।

अथ राजधानी होन मे . अथ नो मुनि ईहै मन्ना ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मन्त्रोक्तं यथा तदा तदर्थे च यथा तदा तदर्थे च

महाराज (महाराज महाराज)

संस्कृत-भाषायां शब्दार्थ-संग्रहः

८८. अनेक शक्तिमंत वरिष्ठ राजा नर नारायण

तस्मात्तु ज्ञेयं न भवेत्तु त्वं न भवेत्तु त्वं न भवेत्तु

ताम्रपत्रं नो, अथैवमेवेति चेत्तज्ज्ञानमात्रं

पुस्तक संख्या १०५३

मन्त्रः ३६ मन्त्रिः से पत्नी तौ द्विः स त्मः ३६ पत्नी तौ द्विः

[illegible]

[Faint handwritten text]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सै माह अग्रे के पोखो न मः आन लानि

Spring
1911

उत्तमं मानुषं जन्म तदर्थं भूतमवदेम ॥२॥

कामाद्यैस्त्रिष्विमानस्तु, धर्ममेवादितश्चरेत् ।

न हि धर्मादिते किञ्चिद्, उच्चाप इति मे मतिः ॥३॥

निपानमिव मण्डूका, रसे पूरितो मिताण्डजाः ।

शुभं कर्मणां याजनी, निवशाः सर्वे सम्पदः ॥४॥

श्रुति स्मृत्युदितं धर्मः, मनुतिष्ठन् हि मानवः ।

इह कीर्तिमवाप्नोति, ज्ञेयं चाजुतमं सुखम् ॥५॥

तस्माद्दुर्मं सहा गार्ह्यः, निर्व्यं संश्रिये नु माच्छेनः ।

धर्मो हि स होमेन, तमस्त रति दुस्तरम् ॥६॥

वानरान् चरेद्दुर्मं, मनिता श्रीधनं यतः ।

कलानां मिव पक्कानां, शश्वत् पतन्तो मयम् ॥७॥

न कामान्न च संरम्भा, नोद्वेगाद्दुर्मं मुक्ते जतः ।

धर्मस्वपरे लोकः, इहैवाश्रयः सतामः ॥८॥

अथैव (इह) धर्मात् सर्वत्र कीमिपुण्यप्रदं तात महाविश्रीदम् ।

न जानुका मान्न मया, न लोभाद्दुर्मं जत्वा जीवितस्य पिहितो ॥९॥

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां

देवानां नान्ति कृतो मनुष्याः ॥

वृत्तिः क्षमा लोडस्तो यं, शौचमिदं नियमः ।

धी विं चो सत्य मज्जो ओ ॥ ६१ ॥ अं शर्म न क्षण म् ॥ ११ ॥

इस प्रकार से महाविमोने जर्म की भाख्या ताच्यान दारणा करी है

अव स्त्री धर्म की व्याख्या तथा कि स ६१ में कि स प्रकार से रहना

चाहिये इत्यादि बातें विद्या संहिता तथा व्यासशक्तों से संमेलित करे है

विद्या शक्ति संहिता या विद्या नाक्यम

भर्तृ प्रजापतेऽप्रतिकर्म क्रिया पर गृहे धन भिगमन म ह्यरदेश ग्याहो -

सनावस्थानं सर्वे कर्म स्वतन्त्रता नात्मा यो विने- नार्हतेष्वति पित

भर्तृ प्रजापतेन ता मते भर्तृ रि वल्लभ पंत दन्वा रोहमां वा ॥

नं स्तो स्त्रीणां पृथक् पत्नो, न व्रतं नाप्युपवसाग ॥

पति शुश्रूषते यत्तु तेन स्वर्गे मही पते ॥ १ ॥

पत्नौ जीवति या नारी, उपोष्य व्रतमाचरेत् ॥

आ पुः सा हरो भर्तुर्नै रक्ष्येव गच्छति ॥ २ ॥

मेत भर्तृ रि सा ध्वी स्त्री, व्रत्सचये व्यसस्मिता ॥

स्वर्गं गच्छत्युपमासी, यथा ते व्रत्सचारिणः ॥ ३ ॥

वदहरीत संहितायां

सुग्रीवन्तु परं धर्म, नारीणां न च सत्तम

शेन भंगेन नारीणां ॥ पमलोकः मुदा ह्युत्त ॥ १ ॥

मेत जीवति वा पत्नौ ॥ पाप्यान्मुपगच्छति

नास्ति स्त्रीणां पृथक् पक्षो, नास्ति स्त्रीणां पृथक् पक्षो ॥

पतिं श्रद्धावते येन तेन, स्वर्गं भवेत् गते ॥ १॥

यत्नं पत्नी भवेत् साधु, पतिजन परा गणा ॥

कं पत्नी सवते तां सि, इच्छा पाति तं ग्रह

अतः पतिवता भोक्ति ५५५ अतः पतिवता भोक्ति ५५५

भक्ति

जोनाही स्वर्गमें पति म, इच्छा पतिजन धर्म निष्ठा ॥

पति जन धर्म से उन्नत म गहना, नहीं दूसरा म, गमें वना ॥

जोनाही होइ स्वर्ग पदना, रहो पति की दायी म ॥

तिन आता उसको पाओ, इच्छा ॥

करो निष्ठा केवल पति प्रभा, नास्ति के लिये देव न दूजा ॥

अन्य देव से नहीं, के मों ग्रह निष्ठा सतु म ॥

भारत माया पद पाओ ॥ इच्छा पतिजन धर्म निष्ठा ॥

नास्ति धर्म नहीं दूसरा देना, नास्ति धर्म केवल पति सेवा ॥

जोनाही नास्ति म ग्रह म, हे गो न कभी निष्ठा सतु म ॥

तस मन पाहा कल पाओ ॥ इच्छा ॥

रागो ऐसी शहनु मका पा. अन्वपुष्ट साका पडे न सा गा ॥

जो नु मजे गह रत निजा गा. लो ग देती सा शनु न ॥

० जन. गोहो नन भ नु माको ॥ ६८ ॥

० पोर क कीर प्रजाने लण्डे. हमा ने और गमत मुस पडे ॥

जि. होने गाडे ठगी के कंडे ॥ जा जाय उने के पास नु म

मत उने मुकु छ प्रछोको ॥ ६९ ॥

भूत परत मुकु छ मसाने. कोना और श्रोत ला रा गो ॥

१ प्रजो प्रजना है ना सने ॥ जा हक भरोन गह नु म ॥

इश्वर से द्यात ल गा गो ॥ ७० ॥

सैता और सविनी नारी. प्रो पक्ष तात और ग नारी ॥

तन गो धति को आ सा करी ॥ पडे दे लो इति स नु म ॥

उम जै सा थक न व नीको ॥ ७१ ॥

हमा श मिका रा गो पदो. स न से मुहु क तो मन दिष्ट ॥

वै देन जिस पर पा प का गदा. पडे नो ऐ सा कि ना संग न ॥

और त ह्य ता न मे सा को ॥ ७२ ॥ यति प्रत धर्म जिभा को ॥

कमीन घर में कोर डी. सा स स मुा को करो न डी ॥

दह न करो डन जी प्ये त ताई ॥ को न डने उत स नु म ॥

लायो न व उहे सि पा लो ॥ ७३ ॥

गन्धे सगंधभी मत गावो ॥ भादों मे जो गहन गुलाबो ॥

स्वागत माधो में मत जाओ ॥ कमो न देखो रात गुप्त ॥

इत सब वरमि दीडोको ॥ एक वरि प्रत वरमि निभाओ ॥

सावि गतम हरे वगा कोरा ॥ तुमने जग मा भमने पाया ॥

ठगिभों ने तुम्हें धोखा दिया ॥ सत् की कमे सदा शुभ ॥

सहस्र मे प्रीति वरमो ॥ एक वरि प्रत वरमि निभाओ ॥

सब है सावि गत मने न दुनही को है ॥ सहे ही का पुत्र को

कोइ न उरग धर्म सनही है ॥ नारे प्रदुष को दी दुःख को

मोन हो पर भाग वत में नै ॥ पा सने उ ही वरि की से संजना

दिली मों का कर्म क से है ॥ श्लोक ॥

उ शी गो दुभ गो न हो जेडा ॥

अतः ऐसा धर्म के कने हो ली गो को परम पद प्राप्त होत है

शशिना सह गति कौमुदी, सह मेधं नत दिन प्रती गते ॥

वमरा वलि वरमि गा ॥ ६ ति प्रती वरमि निवेतने इति ॥ ॥ ॥ ॥

अत मां स खोने वागे ॥ ^उस्से ने किततरह का भावत वरमि अनपि कर रहे है

देख कर कने भाष्य हर है देखिये जी सा कवि नगा नत गाते नि स

नर उ होने स वेन गम ने मं वता मा है ॥ स न ग हो स न देव वर गा है देखिये

मां माहरी लो गोने भारत में विना मया दिये ॥

गौ माता हा दुःखी न कोई ॥ दी और दुःख कहां से होई ॥

वन विचार सिप मे था खोई ॥ दुःख निमट न जा दिये ॥

दुखाना से लो गोने ॥ भारत में ॥

हा ॥ शानों का पावन करत ॥ गौरक्षा में चित्त में धरत ॥

हिंसा करने से न हिं डरत ॥ लट्ठ लट्ठ करे नाना दिये ॥

आ कत ता से लो गोने ॥ भारत ॥

जिन से है दुनि पां का पावन ॥ उन्हें मार कया सुख से लावन ॥

फंस गई प्रतापित के जालन ॥ उतम पशू खपा दिये ॥

क्या मन धारी लो गोने ॥ भारत ॥

मगा उठने से दुष्टि छाये ॥ दरि पाओं में भी न सपाये ॥

मोर कहां से दूक सुपाये ॥ मार मार के टा दिये ॥

विष दाता से लो गोने ॥ भारत ॥

कहत से के गो न रहेना ॥ तीतर रहे कत कनो न रहेना ॥

धुंन मैना भन मो न रहेना ॥ हरि पद गदि निना दिये ॥

पे द की मा से लो गोने ॥ भारत ॥

प्रभा मेरे दुखे नहिं छोड़े. मन के हो गये होने जग के तोड़े
कहें से नेने गरीबी जोड़े. मैं दूँगे मोठ बिका दिये ॥

कीनी खला रोठो गो ने ॥ भारत ॥

पाटे नोल गा गहनि डोर, सस्ते खार मुग गोह ने चोर ।

गरीब कच्छ पन में ने मोरे । ऐसे बात दिखाने दिये ॥

३. खदे भासे को गो ने ॥ भारत ॥

जब सब न. नु निन झा में गे, सो बोतो फिर पे कूपा खापें गे ।

कह भी सा सब सुख नसायें गे । सो कारा में गा दिये ।

सुन नई सा रीतो गो ने ॥ भारत ॥

सत्ता है अति क कषा कहें देखिये यह हिंसा के साक्षात् प्रति
अहिंसा पर मोक्ष मः... इस धर्म के प्रति पादक भगवान् गुरु ने

कषा कहा है

नेतेन अरि मोहेति । येन पाणानि हिंसति

अहिंसा सन पाणानं... अरि मोहिष्यन्ति ॥१॥

अभीत न ह आ सने ही है जो प्राणों की हिंसा करता है

भगवान् प्रभु कान भवन में आपने वात अर्थों की शरीर करते हैं

पशु भाव उन नई को की कषा दुखदा होती है देखो कवि जो

ने कहा कहा है

हमारा नवीन पथ

सो घेन दुते दिन हो नके, दिन राज ! अब जागो हेर ।

नातो पजोगन में ढगो, गह काक डह गागो अरे ॥

परिणा मइ स आनस्य का, भीषमान नाहे जाइ हा ।

पन जोर संकट काज डह ॥ देखो गगन में छार हा ॥

सो कुछ सिखा गादेश को, अनतो स्व गं कुलो मको ।

निजाति पमं ना दे, अयेन दिने भी सीख को ॥

निधमि नीमलिनेदि तो परं गहगो निदेहे ।

सो अरु हारे खून से फिर भी हरा महहिन्दे ॥

कोपी कोरक मण्डल न खेचु, अब तो साधको ।

गुरि जान न कर जाति की मह जाज भयेन हा पको ॥ मय दुःसे उचत

बना हमारा पथे हि विच्छिने,

कुचिद भुखैरप्य पथेन गम्यते ॥ कने

पुताण मि, ताथ सर्व, नयापिकायं नरमि, यं वयम्,

रान्तः परी, यतरह न नने, मृद परपत्नयेन मयुहिः ॥ कालिदासः

तातस्य कुपे, मेति पु, गारा, क्षारं न नं काः पुताः पिबन्ति ॥ प-वतने

॥ संकट सि, मयक कुन आमेतहि गरमन, प्रावयेति मरन न जाये

मोक्षिते मयेन न डरं, प्रपुवमः कीदृशः ॥

जो नाति और स्वदेश के हित, पाता दान दिवान ही ॥
 जो भाई तो के हित करीं, संजा मयोर किया नही ॥
 निज जातिके भान मान में जो, तेत दूक दिवान ही ॥
 जो ना भडा कित काम का जो जान साथ जो पान ही ॥

और

उगेइस भारत में, पात अदिन सेव और भुंगित
 कपिन और कणाद, गौतम ज्ञानेश्वर सुखदा
 हरीधन, दही निरुपवलि कला काजग गदा मं ।
 देदि काम रस्व नही पग धर्म से जिन का दग ।

उधनेक और कर्मिक शिष्य पर है

पुनः एक और अवि जाके विषय में निखर है

और

ए अवि जाने हे में है नां से वंदन कर दिवा
 दान तो दुरमत गई गुमोद से कल भरा ॥
 सत्तनत भी छिन गई जव धर्म कर दिवा ॥
 तो भी दुश्मन बन गये, पहलू में जिन से दिवा ॥
 प्रनिन दुःख किते सुनाने, कोई हित नहिं जाने ॥
 प्रजिन की शरणा में जाने, अहो न से दुपाने ॥

वन्दान ते भवतो दुःखावस्था दण्डिते दुमे गौ कहेतो है नि
सेवया

हम तो यह जान चुकी जग में भव होत न पुंस कहीं हिंदू जो ।
बो रता लोप भई छुनि साधुता भाजि गहे गृहिने कुन हूजे ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भेदें गये प्रान रहेन सब गये भूजे
पूजिन भाग्य भई अनाथि नि मा तेहीं जाति हो सायत बूजे ॥ १ ॥
धन सोहिनी तान कोना लो

हृदय में कोउ नाहि सहायक

बिनु अपराध वधी जाती हम निषेध वधों का मारत नाहक ॥
माखन दूध मलाई खिवा कुं पालि सयान कों ईन जो हम ॥
जैन छोड़े उपजावत भन्त हिं हम न हिं खात सुवेदि निरुधम ॥
मारत कुं कछु सेवति नाहीं जित भेजें उत जाइ च गें जित ॥
सो गभये वल भानति देहनि औन पण धक सकहु अनुचित ॥
ये हो गौवन के प्रति पालेक माखन के चखवै पा ॥
मरि जाति अव भावि न जानउ भारत सन्तति भै पा ॥

जो प्रमुख बगल में मयूर स्थापित आत्यंक प्रकरन है वह नगर की सीमा है समागत निवासी।

नि. १. अ. ॥२॥

• नमो ब्रह्म विष्णु शिव • कर्म कुरु न्ति येनतः ॥

कर्मणा मनसा वाचा ॥ निरपेक्षं पातं तित्तेन ॥ १३० ॥

तस्मात्तदा नाद इति , प्रत्यक्षं तन्मात्रम् ।

॥ ११ ॥

प्राप्तता: कति. जो १२मः २५२५ चरणी तान

एतन्मन्त्रं नमस्कृत्य ॥ माता स्वर्गाय नमः ॥ १३१॥

वसन्ति यत्र मयं स च भाः शास्त्रोक्तान् पश्यतम् ॥

तेषां निष्कृते विद्याः ॥ अथारभ्य निन्तान्यथा ॥

॥ २१॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

वसन्तप्रसन्नं शिवं, पञ्चम्यान्वितं ॥

त एवमद्भक्ति प्रीति निःशु भे पंक्तरः परः ॥४६॥

अथातः ॥

नामिन्नाना मन्त्राः हं, मन्त्रः श्रद्धा विष्णुनामः

॥ मातां मृतं तं पतिं ॥ वराणां पश्यतोऽनघ ॥

॥ अथाहं भूय भवतिष्ठान्निभयान्तेऽपि ॥

जगत यह तीन दिना का खेल
राजारं क सबै दिन तो न के ओ मा गा के खेल ॥
आज कि सो को क न कि सो को जाना है दुःख के नु ॥
तब क्यों से ठ रहे न भूख जाना तुम्हे भुके नु ॥
आज नु ग्या रा कल ह मारा लेना है अब हेन ॥
ज्यो न हे देश हित निज तनू को राखत सदा हयेन ॥
कैसे तु नम मनुज के पाये भरी जवाजी के ल
चलो दुगनो पाँन पि पारे सबै विद्वान को हन ॥

दो हा

८८ भारत जित भारत हं हरि सत नि सहित मलीन ॥

दीन दीन से बलि निन खि मुभ ग महा याली हीन ॥

जित भारत की दी नता, नखि हिम पाहन से प ॥

ता हूं पै क हृण पि चलि सहि य व क्षिर मत रो प ॥ २॥

महली खाने वाले सज्जनो त र स क क जित

महली को ग्या त भो अ बात ता दि ताने क वे द महली जो धन धर्म सिद्धि नाक दि दौ ॥

महली ^{गरीब को} अता भ ने क स ह ता को मा रि २ खाने तो गु स हि गां गु मे म दि है

हा पारे भ मागे तो दि न्ता ग ओ न डर लो गै भाने के ओ मागे तो गु स दो मु त मागे है

भव ही तो नागत नी क महली भ को सत में मरी न न क पारे त व हा पता य बी म दि है ॥

महत्नी को रूप जब विश्व स्मर जोवना परास्वों तब तो

महत्नी का दू पेद में न पवि है

महत्नी को खात औ उरात नाहि ईश्वर से

मिलि है नव नती जात स यर मयि है

अरे सुख अव इं तेनेत मत अनेतवन

नमि मय कां सीतन दूनों भां गिनाचि है

सर्वदेव विनितीत जे से गीन नै से गो मां स

पुनि ईश्वर रूप रना तताओं मान न कै मनि है

प्यारे भद्र पुरुषों कर्म से सा नस्तु जि स के करन से

शास्त्र गाथु इ औ शुद्ध शास्त्र गाते जात है देखि ये मनुभगवान

जगावतला ते है

श्लोकः

शुभो शास्त्र गातो मेति, शास्त्र गाश्चेति शुद्धताम् ॥

क्षान्तिपात्रात्तमेव ननु, त्विच्छाद्वैशात्तमेव च उभयः

न कुत्सेन न जात्या वा, किं वाभि शास्त्रगोभनेत ॥

चाण्डालोपि हि वत स्यो, शास्त्रगाः स पुत्रिष्ठिरः ॥

उपरोक्त श्लोक के वचना आ पक्ष म्व है इन्हें नेवतला पाई

किं जालि वाकुल ना किं वासे शास्त्र गा न हें होता केव न कर्म से ॥

तू मे मनुष्य यदि स भव सागरसे पार होना चाहता है तो
 कामादि विकारों का पने ना मकर उस सर्वेशक्तिमान
 पुण्यकी भक्ति कर देल कठिमें भट्ट ही स्व रूप प्रज्ञान है तो
 ज्ञान तबोत है (भजन)

गादि नू तो न मन में हरेना मन्त्रों विचार ॥ १ ॥
 सुनना न ही न जे है ॥ शिर काट कर न गारा ॥ २ ॥
 मौन न भई है ना तो , दिन द्वा केर पिपासी ॥
 जब मौन कीत पासी ॥ उफ को केर किनारा ॥ ३ ॥
 नर मान दान खजाना ॥ कोही संगे में न जाँवा ॥
 ज्यों देख कर भुलाना ॥ सब भुं हई पसाया ॥ ४ ॥
 सुन्दर है देखे तो , भस्मों की कागो छरे ॥
 पन ली मना गे देरी ॥ उपा केर विनाया ॥ ५ ॥
 भाया के जान मारि , मूर मारि समाई ॥
 न जान न मोहा पाया ॥ हरे चरणोंक मारा ॥ ६ ॥

किती भजन

भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति
 भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति
 भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति भक्ति

अनेक घर न कोने न पारी , जो कोरि नित करे दुःखदा ॥

नमक जो लिज्जी को है मीठा हर , गुण के निंद मिटारते है ॥ ४ ॥

सुकन तो राजिन न पाके साधिन , धनो विधान न मग मग में ॥

जिना की पारी नगम ते पारी , वर ते न सुन्दर बिहारते है ॥ ५ ॥

प्रियानर व्यास हुआ दिव्या , मित्र लीला न नम मरण का ॥

अन्धान का मखी मोहना , लोगो न मिले केगा रहि है ॥ ६ ॥

नती प मान

नखि पां पै न कबो देखे , मुके दिव्य की से मारी है ॥ ७ ॥

कभी कहु से गप न कोने , कभी ता तीर मारी की ॥

निगर का दान नृप मरा , न ते जाने अना गी है ॥ ८ ॥ नखि पां ॥

मान म की मोर तो पुरत , ते ते दिव्य की न में ये है ॥

नमन में नै न है मुक को , खन न तेन की मिता रो है ॥ ९ ॥ नखि पां ॥

इसर करती है न ही कोई , दण्ड की मि मो ते से ॥

लिना ही दार दार के छिटे न ही तेक रा रो है ॥ १० ॥ नखि पां ॥

अमर दिन कर को मेरे , मिता जो न करि मुको है ॥

नर दान न द गम ते ग कहे में माद गम है ॥ नखि पां ॥ ११ ॥

मम दिव्य ते ग रूप कि म अकार का है नग दम पा मर को दिव्य तो है दम द

नती प मान

आदि १००० गाना, आगे १००० गाना १०००

जी. तो पर दशा न करि ते । द्विती संद जरीते मरि ते ॥

अन दुःख ता सुख रते ॥ चन्द सेन से नी वने में ॥ ५ ॥

गणिका अना मिन्न जानी । सेन सीतवन निशाने ॥

मूदन की प्रगाली ॥ मन निधितर राशरसा से ॥ ५ ॥

गजन ॥ ५ ॥

तो दिन मे मेग ना म गाता रहेगा ॥

तो मुझ को भोक् माद साता रहेगा ॥ १ ॥

नहीं पूरे होने के मुनि पाँके धांधे

वृक्ष न क वहां दिन ल गाता रहेगा ॥ २ ॥

मह है जान को बूधे से सो मु मरि न ॥

अगर ध्यान से इ म को खाता रहेगा ॥ ३ ॥

तो भानों का कानों का बुद्धि का मन का ॥

मेरे पार मन रोग जाता रहेगा ॥ ४ ॥

ये मुमकिन नहीं तुझ को मैं भूल जाऊँ ॥

तो तु मुझ को नि भ प म ना ता रहेगा ॥ ५ ॥

मुझे मनाया यदि उमर न होत । तं जगत् सि न्याय तं न्याय ॥

तो जगत् न्याय तं न्याय तं न्याय तं न्याय ॥

तुम जगत् न्याय तं न्याय तं न्याय तं न्याय ॥

५७५

राम भुवन रहि सुनि रंगकरने को नानि नानि मो
 शन अयोधे तीसरे नाना रंगानि काना काना नि ॥१॥

शत आये श्री तीसरे चन्द्रा ज्योति मन्त्र क. न. नि ११॥

भीरि भीरि ताप न दन है, होम मुनि नन नो

कौश २ मा गा वि लेखे. केशवत रु न नि

मैंने सागर के पान करने नहीं पाए नहीं जल को

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथानि शब्दोक्तं तत्रादिभिरुक्तं तत्रादिभिरुक्तं तत्रादिभिरुक्तं

2591 5-11-21 11-11-21

किं श्री गति अंजु कम्प तमा ग विनि निजिना व.

सुतनाम संस्कृत-सिंह-संग्रह

मनो जने र मने मा नो मनाम न मने मा नो

5. 11. 21. 1. 1. 1. 1.

16. 11 1715. 17 1715.

अनं अननं नकारण मज्जनं च तत्र न चकार मज्जनं मज्जिनि

जिन शरीरों में जन्म देना: जन्म: मा मा ! जन्म: किडो मा

महाराज २१६ का २१६ न

मन्त्र ५५९ तन्मन्त्रं रत्नसारस्य नाम मन्त्रं हविर्वायुनाम मन्त्रं

शरणा में आये हैं इस मुखारे, दया करो दे दयालु भावने ।

सम्मानों के बिना ही दशा दया से

न हम में वन्न है न हम में शक्ति न हम में लाभ न हम में भाव्य ॥

मुखारे के हैं हैं निभगाहि दया

जो मुखारे दया में तो हम हैं मेवक, जो मुखारे तो तो हम हैं नाकक ।

जो मुखारे न कर तो हम मुखारे

मुना है हम अंश है मुखारे, मुखारे मुखारे मुखारे ॥

यह है तो मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे

मुखारे जो हम तो हैं मुखारे मुखारे जो हम तो हैं मुखारे

मुखारे तो हैं हम मुखारे मुखारे

प्रदान कर दो मुखारे मुखारे, मुखारे मुखारे मुखारे ॥

तभी कहो तो नाम मुखारे मुखारे

न हो गो जन न कर मुखारे मुखारे, न हो गो जन न कर मुखारे मुखारे ॥

न मुखारे तन न कर मुखारे मुखारे मुखारे

हमें तो मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे

मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे मुखारे

गजानन नं. २

ऐसी कृपा हो शंकर जब प्रागांत न से निकले ॥
हो प्रागा पार कबवा जब ॥ १ ॥
भी गंगा जो कातर हो, और बेचन का बिटप हो ॥
जनी रहे पहर भर ॥ २ ॥ जब ॥ ३ ॥
अंजली में गंगा जल हो ॥ और मुख में तुलसी दल हो ॥
हर श्वास में हो हर हर ॥ ४ ॥ जब ॥ ५ ॥
वृत्त की त्रयो रणी हो ॥ और चंद्रवार भी हो ॥
और आप हो वावा ॥ जब ॥ ६ ॥
दामन को जब पकड़ लू ॥ तब तीन हिमा पिघालू ॥
गोदी में गिर पड़े शर ॥ ७ ॥ जब ॥ ८ ॥
परिणाम यहि यहि हो ॥ तो मुझ को शगल हो ॥
यश आप का हो मुझ ॥ जब ॥ ९ ॥
जब तन तजा पतित ने ॥ दावन बिधा थ्य शिव ने ॥
चर्चा यहि हो धर धर जब ॥ १० ॥
है गद्ये श्याम अनुचर ॥ देखत है पादें बदतर ॥
मारा हिरे नहर ॥ ११ ॥ जब ॥ १२ ॥

मं३ गजल ॥

पह जन का है निवेदन जब जग में जन्म होवे ॥

तेरे चरण में हो मन ॥ जब ॥

जहुं जान होवने रा गुण जान भी होवे ॥

उस वा में हो वसे रा ॥ जब ॥

पृथ्वी वै जब मैं आऊँ, तुझ को न भूल जाऊँ ॥

तेरे ही मीत गाऊँ ॥ जब ॥

मा पा नही सताये वह जान दिक में जाये ॥

हरना तुझे दिलाये ॥ जब ॥

जब काल की हो केरी, छवि सामने हो तेरी ॥

मोहन पह पाद मेरी ॥ जब ॥

धारे सज्जनों पानी भी अजीब-सुहृद सकोरक्षा मुनुष्य
जो भी सी से जि सी हानत में हो पर तो भी करनी चाहें ये अत्यथा
अजी तिज्यापि प्रतापि, कथा मिथ्या तेरे डगगाम ॥
सम्मा वित्त स्प-चा-ती ति मरणादति रिच्यते ॥१॥ गीता
दे गने मे पानी ही न वस्तुओं की स्या दुःखा लेती है
शुद्ध कवि मले दप क विता रूप में व्यावर्तनाते हैं

क वित ॥ १॥

पानी विन मोती कोई जोहरी खरी देना हिं

पानी विन सुन्दर सिरो ही के हि काम की ॥

पानी विन छोड़ा को सवार नहि चाहै करै ।

पानी विन ही रा की हू की मत न समझी ॥

पानी विन सुन्दर सरोवर न नीको न गै ।

पानी विन सान हू सुख त न हिं नाम की ॥

पेरे निरझानी कू यतन कर पानी राख

पानी विन गये मा नी जिन्दगानी को न काम की ॥

ऐ ईश्वर कृपुओं की प्रकटाई को देख कोई उन के नि ये विशेष

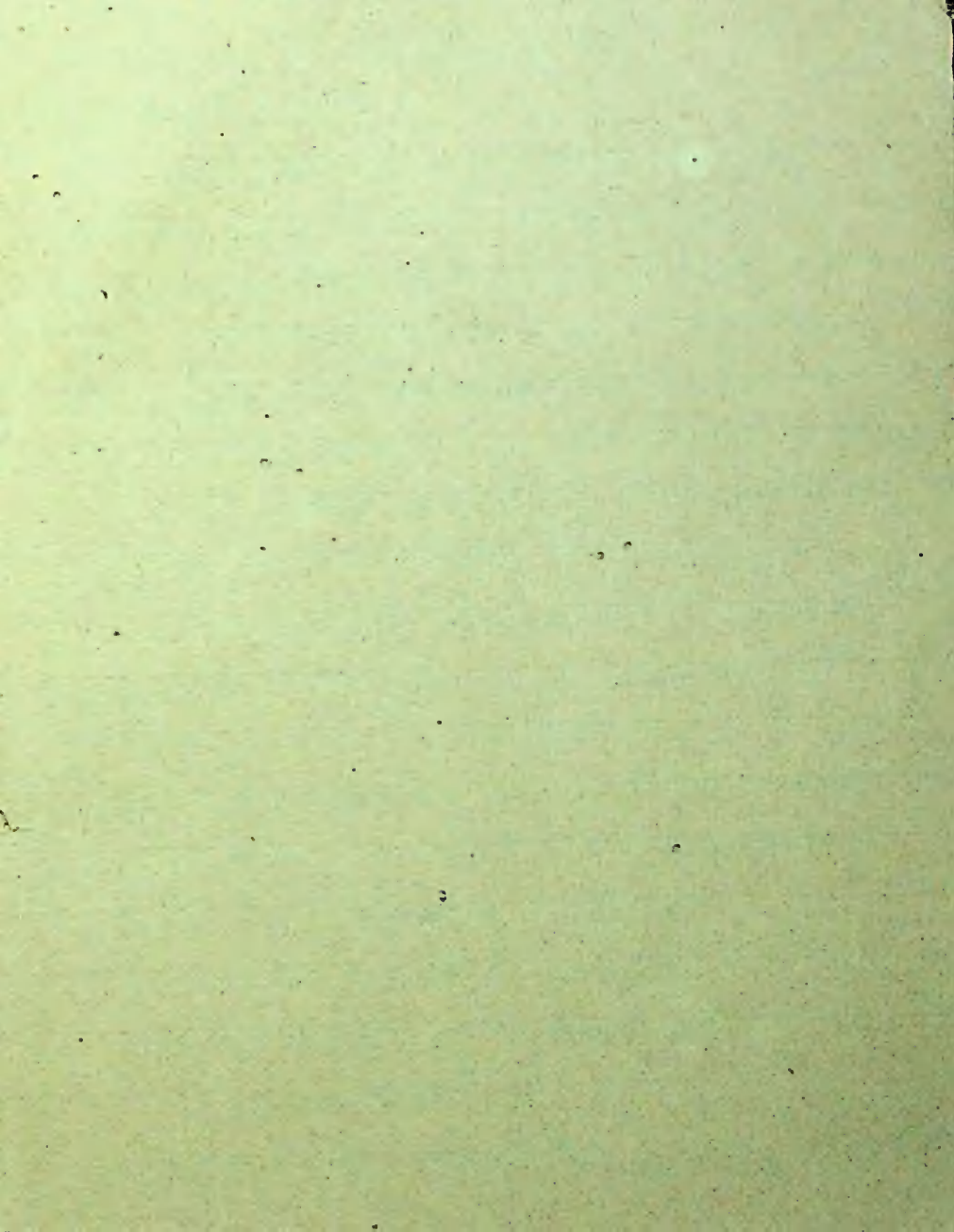
चिन्हों नहि नि रूप का करवा

कवित

॥ नमः ॥ ११ ॥

जमाना रङ्ग बदलता है ॥

राज सुवह को दिन चखना है रात को मूर्ख बन जाता है ॥



आदि न कारिकासु

[ब्राह्मणालक्षणम्]

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च ॥ सर्वभूतहिते रताः ॥

क्रोधं कर्णं न जानन्ति ॥ एतत् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ १ ॥

सन्धो नासन शीलश्च ॥ सौम्यचित्तो दृढव्रतः ॥

समः परेषु न स्त्रिषु ॥ एतद् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ २ ॥

एकाग्रश्च सन्तुष्टः ॥ स्विन्नाशी स्वन्ममैश्वर्यः ॥

अनुकूलमिगमोच ॥ एतद् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ ३ ॥

पराङ्मुखः परमित्रश्च ॥ पाप्मिना परिहातः ॥

अदम्यं नैव गृह्णति ॥ एतत् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ ४ ॥

सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्म ॥ ब्रह्म चेन्निर्मलमिदम् ॥

सर्वभूत ह्यवा शस्त ॥ एतद् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ ५ ॥

वसिष्ठः ॥

योगस्तेषां देमोदानं ॥ सत्यं शौचं दयाश्रुतम् ॥

विद्याविज्ञानमास्तिक्यं ॥ एतद् ब्राह्मणालक्षणम् ॥ ६ ॥

अथ षोडशा संस्काराणि ॥

गर्भो ध्यानमनश्च पुंसवनं, सीमन्तजातार्भिष्टः

नामात्म्यं सदनिक्रमेण च तथा ॥ अन्तर्ग्राशनं चर्म्मणम् ॥ १ ॥

पुडात्वं व्रतवन्धकोप्यथ चतुः ॥ लेहं व्रतं तानां पुरः

क्षेत्रान्तः सर्गि सर्गि च परिणामः ॥ इमान् षोडशीर्द्धिदायकम् ॥ २ ॥

प्रातः स्नान फलं (याज्ञवल्क्यः)

गुण दश स्नान परस्मात् साधो , हृदयान्तेन प्रवृत्तत्वा गौतम ॥

आयुष्य मोक्षाय प्रोक्तं पत्नं ॥ पुः स्वितातागने पश्चिम प्रयोगः ॥ १ ॥

अगम्यागमनाशौचं ॥ वापेभ्यश्च परित्यज्यत ॥ नागदिवः

रहस्य च रितात्मा वा न्मुच्यते स्नानं योगतः ॥ २ ॥

स्नानात्पूर्वं भक्ष्यं गोशापदायीः ॥ अग्रेष्वाभानसनागं विधिः

६ ॥ आतः फलं मूलं ॥ १ ॥ स्नात्वा मूलं मौषधम् ॥ २ ॥ मुनिश्च निमित्तं

भक्षयित्वापि कर्तव्यं ॥ स्नानदानादिकाः श्रेयाः ॥ ३ ॥

३ ॥ अर्द्धं वस्त्रं निष्पीडनम्

निष्पीड्य स्नानं वस्त्रम् ॥ पश्चात् सन्ध्यां समाचरेत् ॥

अन्यथा कृते पक्ष ॥ स्नानं तस्याफलं भवेत् ॥ १ ॥

सन्ध्या फलं ५ अग्निः

सन्ध्या मुनामते मेतु ॥ सततं संश्रितं जनाः ॥

विधूतं वापस्ते यावन्ति ॥ ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥ १ ॥

प्रणादि भारतं ज्ञेयं , अष्टाक्षरं महा मुने ॥

पतो हि कर्म भूरेषा ॥ ततोऽन्याभोग्यं मयः ॥ १ ॥

भारतं वै

अंम दत्तं

॥ सममन्ते ॥

निष्पुत्राणि

ददायित्वं भवेत् ॥ मीनं पुण्यं सदा ॥

॥ सा ॥

याज्ञवल्क्यः

मानन्तोऽगां ५ यित्वां हि विक्रमं एषां स्तु वैद्विजा ॥

तेषां वै पावतायां न ॥ सन्धा सन्धा सन्धा ॥ ११ ॥

सन्धा या सन्धा

अहे गन्धा गः सन्धिः ॥ सन्धि नक्षत्रं वाजिनः ॥ नागदेवः

सा ३ सन्धा समाख्याता ॥ मुनिभिः सन्धा दृष्टिभिः ॥ १२ ॥

सन्धा का लः

सूक्तो दत्ता पूर्वं हे चार्थिन्हे सन्धा का लः ॥ नागदेवः

सन्धा का लः प्रागुत्पन्नं विद्विषा हि मुहुर्नक्षत्रः ॥ अग्नि स्मृतौ

क्षत्रिस्तु न दृष्ट्या च दृष्टं सा द्विशेष्युत ॥ ११ ॥

निशागां वा दिवा वापि ॥ पदज्ञानं कृतं भवेत् ॥

निष्काल सन्धा करणान् ॥ न सर्वं हि प्रणश्यति ॥ ११ ॥

भविष्य पुराणे ॥

सितेन भस्मना कुर्यात् ॥ निसन्ध्यां नानिगुण्डकम् ॥

सर्वं वाप विनिर्मुक्तौ ॥ शिनेन सह मोदते ॥ ११ ॥

सन्धा शौचं जपो होमः ॥ स्तार्थः देवादि प्रज नमः ॥

तस्य वाक्यं मिदं सर्वं ॥ गार्हपत्यं न धारयेत् ॥ १२ ॥

जं ग ति प ले नमः

प्रातः सत्प्रातः कालः [मनुः]

ब्राह्मे मृदुर्ते ब्रह्मेते, धर्मीर्थातु निन्तयेत ॥

का ॥ लेशावचतन्मूलान्, वेद तत्तार्थ मेव च ॥ १॥

[वेद तत्तार्थ द्वयः]

ब्राह्म मृदुर्ते [निधाम् प्राणि]

सजेः पाश्चिम मागस्य, मृदुर्ते पश्चित्ति यकः ॥

सग्राह्य इति विजेयो ॥ विहितः सद्बोधने ॥

पञ्चा २ उषः कालः सप्त पञ्च ह्योद्यः ॥

अथ पञ्च भवेत् प्रातः ॥ ततः सूर्योद्यः स्मृतः

अस्म धारण फलम् ॥

आदि मजे जगेद्यमि, वैश्वदेवे सुगर्च मे ॥

धृतः निगुण्डः प्रसात्मा ॥ मृत्युञ्जयति प्रातः ॥

श्रीरत्ना बन्धन विभाटः

स्नाने दाने जपे होमे, सत्प्रातां देवता र्जन ॥

श्रीरत्ना ज्ञानि विना कर्म ॥ न कुर्यात् कदापनः ॥ १५५

श्रीरत्ना मुक्ति विभाटः

ज्ञानेऽथ स ज्ञाने सङ्गे, भोजने हन्त धावने ॥

श्रीरत्ना मुक्तिं सदा कुर्यात् - इत्येतन्मनुरत्र वात ॥ १५६

गा यन्त्रीशब्दस्मारणीः [नागदेवः]

गा यन्त्रं भागते अस्मात् तेन सोऽप्येत

सन्ध्याः स्मृतिः

विप्रो नृपः मूलकात् नमसन्धानेन शाखाधर्मक्रीणिपनाम्

ते स्मा-मूलं यन्त्रतोऽक्षणी यं अहिने मूले तै-पनं न शाखा ॥ १ ॥

अंकार प्रौढ मूलः क्रमपदं सहितं बृहन् वितीर्णं शाख्ये ।

नष्टं वनः सामुष्मो यज्ञरक्षिन् कल्लोऽप्यर्कगन्धं दधानः ॥

यज्ञश्चाप्यसमेतो हि जमधुवगणैः सेव्यमानः प्रभाते ॥

अधे सायं निःकालं मुचरितं चरितः पातु वो वेदवक्षः ॥ २ ॥

स्वकाले सेविता नित्यं, सन्ध्या कामदुचां भवेत्

अकाले सेविता सा च, सन्ध्या नन्धा च धूरि ॥ १ ॥

स्पर्श दोषः

दीर्घं कोटि शिला पृष्टे, नौकायां शकटे तटे ॥

विनाह वटुसंपर्के, स्पर्श दोषो न विद्यते ॥ २ ॥

ब्रह्मचर्यं हर्षं तपस्यां च असौ प्रवर्णिताम् ॥

चेतपश्चतस्र्यन्ति, क्रौं माराः ब्रह्मचारिणः

विद्यावेदं व्रतानान्तं, दुर्गास्तान्ति तरोन्ति ते ॥ १ ॥

ब्रह्मचर्यं कीं परि वञ्चतासि नाना न हीं

मिह ह्ये सकला ह्ये

सिद्धि विन्दौ महा मले । किं न सिद्ध्यन्ति भूतले ॥
यस्य न सादा-महिमा ॥ ममाप्येता दृशोभनेन ॥ २१ ॥

ब्रह्मचर्या प्रतिष्ठापनीयता मः - मत्तः

नाम ज्ञान योगस्थिते ।

स्वयं कर्म करो गत्मा । स्वयं तत्फल प्रश्नुते ॥

स्वयं भ्रमस्ते संसारे ॥ स्वयं तस्मात्विमुच्यते ॥ ११ ॥

विषय की श्रुत नीरता ॥

दोषेण तौ शो विषयः । दुःखाः सर्वे विषादयि

विषं निहन्ति भोक्ता ॥ दृष्टां चक्षुषा पश्य ॥ २१ ॥

सत्सङ्गः से जीवन्मुक्ति [शंकराचार्य]

सत्सङ्गत्वे निःसङ्गत्वं निःसङ्गत्वे निर्मोहत्वे म ॥

निर्मोहत्वे निश्चलत्वं ॥ निश्चलत्वे जीवन्मुक्तिः ॥ ११ ॥

सत्सङ्गः पामोतीर्थः ॥ सत्सङ्गः परमं परम

तस्मात्सर्वं परित्यज्य ॥ सत्सङ्गः सततं कुरु ॥ २१ ॥

विर्भाव भोजनेन भवन्त हा निः श्वाराम ॥

अनागे ग्यं श्रुता पुण्यं ॥ अस्वर्ग्यं श्रुति भोजनम् ॥

अपुण्यं लोभ विद्विष्टं ॥ तस्या तत्परि वर्जयेत् ॥

देहा

तुलसी अपने समको, रिम गजेव है स्त्रिया ॥
लेत वो पर जा मि है ॥ उनया सुतयाजी ॥ ११ ॥

हमारा आत्मिक बल

हमारी की सन्तान है ॥ नी हवनने के लिये ॥
यह जन्म है निज देश का उद्धार करने के लिये ॥
हम सिंह सुवन सुप्रत है ॥ महेश कानन राज है ॥
महामा भारत ही हमारा ॥ स्वर्ग का सुर राज है ॥

हम गोदों के फुल से हैं मित्र होने को नही ॥
नैकार है सुर राज से भी आनन्दने को नहीं ॥
अभि मन्त्र का अनुगम है प्रह्लाद की परिभक्ति है ॥

भगवान को ध्रुव वन तुलसी की हमों में शक्ति है ॥
सुन्दर स्वदेशी चान के हम जन्म सुसु सुना सहे ॥
निज प्राण प्यारे देश के हम वा सहे नुन आश है ॥

पार्थिव गमने विचार

तिरि वारम्भ नक्षत्र पार्थिव देहा समन्वित म ॥
इन्द्रिय मुने भाग ॥ ज्ञातव्य गमनादीति ॥ ११ ॥

इष्टानामेव न हि गीर्ग ॥ चंचल एव हि तीर्थके ॥

शमवेदैर्भवेन्मार्गे ॥ वैचमे गृहमागतम् ॥
बद्धे रोगो भवेत्कश्चित् ॥ अथो मृत्युर्विनिर्दिशेत् ॥ ३ ॥

अथ योग

लभेत् ॥ १ ॥ धनं नन्दे ॥ अथ मे भौमं भास्करम् ॥
चतुर्थे च भवेत्सौख्यम् ॥ अथो भवति बालकः ॥
अथ बद्ध ह्या भौमं कुलम् ॥

चण्ड प्रताप बद्धा त्विललोन्मत्तः ।

स सप्त प्रहुर निपुणो धनधा यः पूर्णः ॥

रत्ना धिक्को रण धातुः सप्तः प्रया ता ॥

त्वङ्गः रत्निते रत्निते सुते ॥ अनुजः प्रती पी ॥ १ ॥

दाता नष्टे होतो मानको को उस्त से बालाम

सुन्दर भगिरथ मयूरण श्रीरक्षण

वीर हो पभीम तो लरे मर आठो यामको ॥

गरया गुमान होय बड़ा सावधाने होय ।

साने होय सादवी प्रती पी गुज्जं यामको ॥

पदतश्च मानज्जो पै मयवा मरीय होय ।

दीप होय वंश को जनै या सरल शामको ॥

सर्व गुण साता होय पचापि लि धाता होय ।

दाता जो न होय तो हमारे को म कामको ॥

पारि मन्त्रों के ही ईश्वर हैं अतः सांख्य शास्त्र ने बतला पा है
कि कैमेश्वरः इसलिये मनुष्य को कर्म करने काहि प
मत शव को ई कानि मोह दमना कहते हैं देखिये ॥

मनुष्य नं २

आग पाई कर्म पुनः कुल कर्म करना सीख लो ।
देश पर और जाति पर हमरे करना सीख लो ॥
माने जाना म मत लो पहिले मरना सीख लो ॥
मि स्ने आ पश्येन दव कर फिर उभरना सीख लो ॥
पार प दिले जानु है पर न लाता दुःख सिन्धु से ॥
तैर कर तो रक्त सागर से उतरना सीख लो ॥
फिर जना दोगे सकल संसार को क्षण मात्र में
देश दुःख की आग में पर पहिले जलना सीख लो ॥
मनुष्यों यदि कर्म करने में प्रकीर्णता पादक्षता कि पाई
पदि धर्म पथ में तन मन धन जो विषाया धातो धर्मियों ने
असु उन धर्म की पुरुषों की पाद कर ता समापन कर्म वृद्ध
देखिये कलात्मी नं. ५१

क्षत्रीय कक्षं गोपे वे आर्त्त निशानवाले ॥

आकर कि क्षत्रियों के वे स्वर्ग मानवाले ॥

अनरुद्धि की पदशाया श्रीमद्वन्दनका ॥

भाई मरत से लागी तब जान ध्यान नाले ॥

वे मोर ध्वज कहां है - कहां ह्यो गये कस्तूराले ॥

हरिचन्द से पता तो ना मो जो जान नाले ॥

धर्मिमा मुक्ति पट्टे श्री ममो श्री ममो धा ॥

अर्जुन से शूल धारी ना की कमान नाले ॥

श्री कृष्ण की निरु म राजा दत्ते निशिन जी ॥

गंगा प्रणय सेवा ली खी कृपा राधाने ॥

हम है उन्हीं की सन्तों, हावनत खगलों सस्तों ॥

जुटनों के लून उठे सब शौकत लो शान नाले ॥

के से नाले दिन की अब नीर इन्द्र मर् ॥

रो २ पुं कीरे कवत क ज पेदल गान नाले ॥

अगे हिन्दु स्या निमो स्या इस लो रोद शोमं भी ॥

वृम उठ कर आपनो दशोन हीं सन्ना म्यान तीरे ॥

मज्जन नं ५६

किम नोद तोरे है हिन्दो स्तान नाले ॥

खुन्दक में गिर पड़े है हिन्दो निशान नाले ॥

राजा तो कहां है तो जो तो कहां है ॥

दशरथ के समान शोभा वांसी कमान वाले ॥

नाता कती चे तेरे आभूषण रहे है

जगा सर ज मोन वाले कगा आसमान वाले ॥

मैं से न मोलने है सर से न मिलने है

ह कि म के सामने है गुगन वात वाले ॥

नेशन बिगड़ गया है खाना मृत विषों से

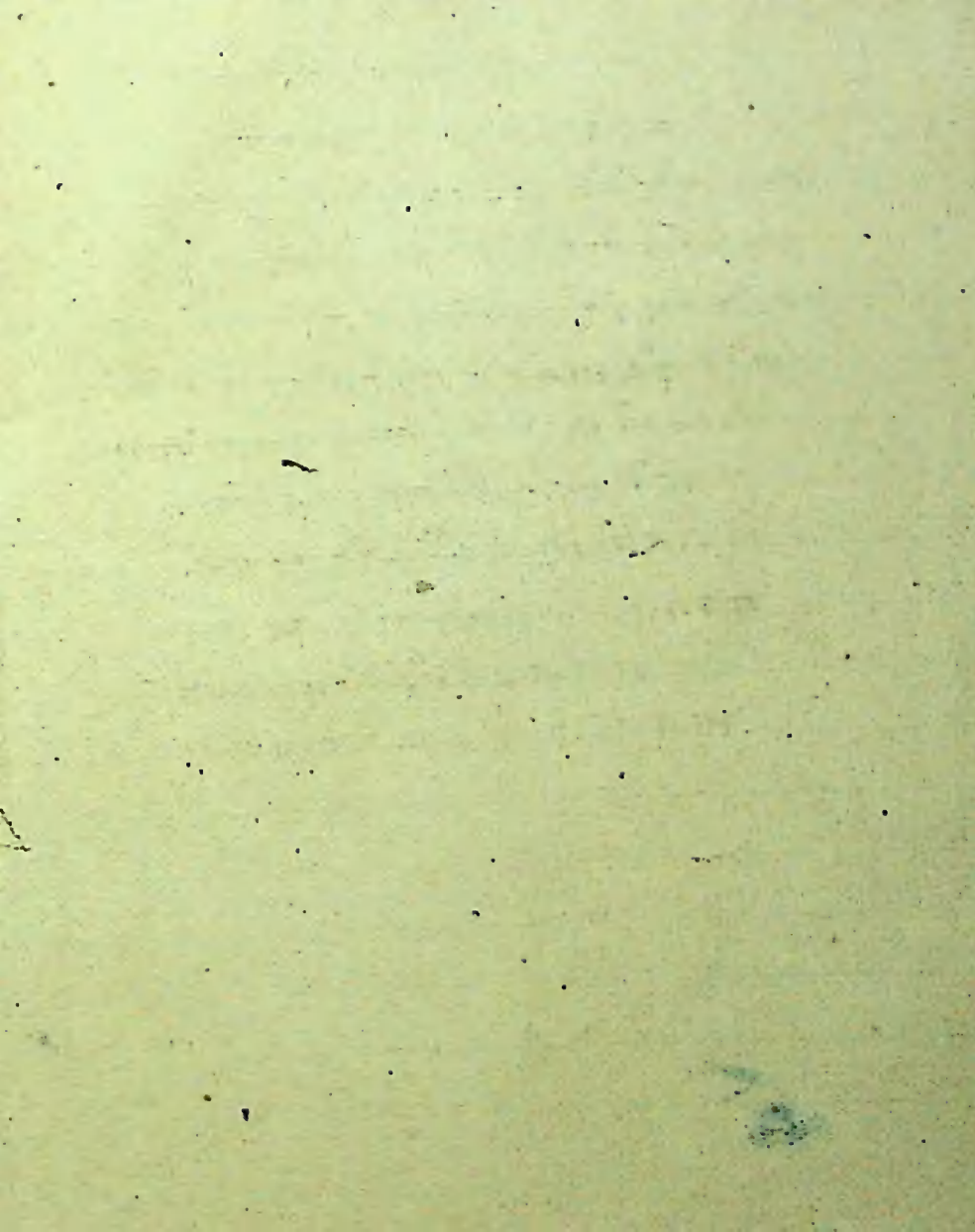
तरवाद हो चुके है मह खान शन वाले ॥

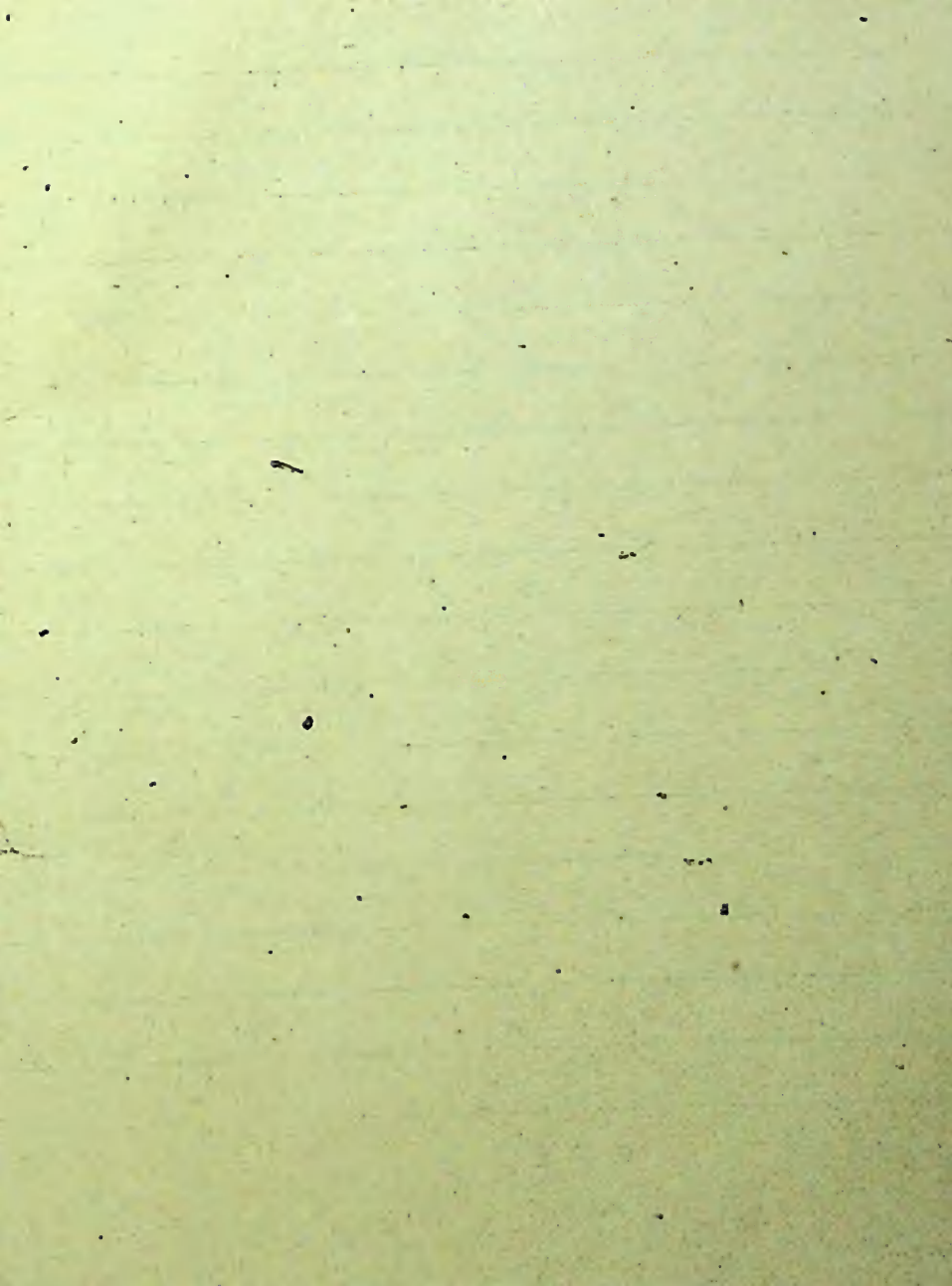
फे सन सर सर मिरे है कपड़े विदेश के है

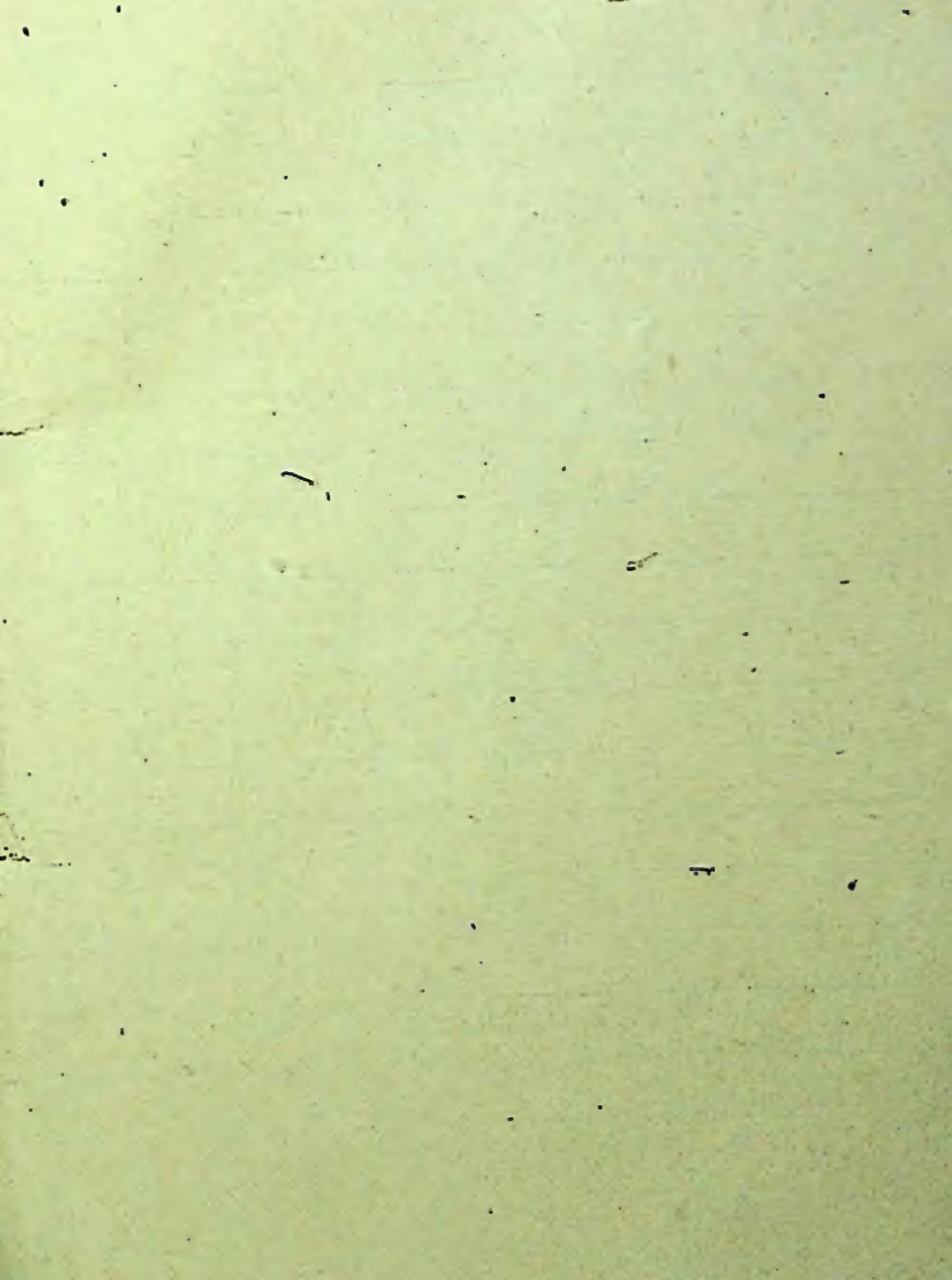
मल मल के साथ रोते ठोके थान वाले

के की जगलो अतरो र सी कहां की नींद

आवाज दे रहे है देशी दुकान वाले ॥







धार दे सतनो वर प्रसन्न प्रसन्न नही जौ न देखा देश नम
 जहाँ जातुओं ओर रहि नों तथा दोन स के भाति न दको
 वर प्रसन्न सदा ता देख न ह प्रसन्न और न ह जाति नो निगोरे
 वर प्रसन्न के भात है जे सब देश में सु सदेश की हो उ को पर न
 देश रहत सति से जोर अन्धकार में सोपा आते देखो पंथाव
 खूने मोटा परने किन ना जन्मा चार कि ता उस आ न ह निहान से

॥ १ ॥

नया सिन्दूर के मणा ॥ उा घर तू कमाने जा पगा ॥
 हम निहल्यों पर कि ता फावर ॥ नूले में हता कगा ॥
 पगान के विधवा तुझे ॥ जवन दिख से ५ ओर रहां ॥
 के सदा वशा की तरहे तेरा ॥ निशा मिट जा पगा ॥
 होई २ गारना ५५ हिन्द के ॥ आलो सदात ॥
 उपन की ना निवतन पै ॥ चरहीना मोरजा मगा ॥
 नुअ करके वगमति पर ॥ चनाई जोरि न्ये ॥
 गाव रस बंद कानती जा ॥ रुक से नु मिय आमग ॥
 खं के वृत्त भाव सति ॥ होई ना हिन्दू जा सही ॥
 अन्धकार भारत घट नले ॥ नु जे में सीतम सदा जा पगा ॥

हिनीय मान

ने खोफ मुल्त करती ॥ दरमान रहन जावे ॥ १॥

कुछ दिन में हरी का ॥ २६ सागर रहन जावे ॥ २॥

उपर से जाया जा किम करती यह रवाता ॥

भारत के खे के लासे ॥ गिर मान रहन जावे ॥ ३॥

दिन खोले करके करती ॥ कानि न रला न मुदको ॥

कानि न में देखने ना ॥ कुछ जान रहन जावे ॥ ४॥

ले जाऊं एक पै फुलों ॥ जगदित्त व रे फरे ॥

गुरकन से नो तेरे ॥ दरमान रहन जावे ॥ ५॥

मानो अगर न सीहत ॥ गांभी को देश गले ॥

देखो न इस जग मो घर ॥ न जान रहन जावे ॥ ६॥

तगीपमन न ॥

कहां दिखे तो मोर अर्जुन भात जो मुध भुला गकरे ॥

गिर खलो है वट्ट भात गले लगालो संभान करके ॥ १॥

जुम्हारे शरीरों को डर से मर्हि पै डरते थे जो दुष्ट सोरे ॥

आने वही नन वल्लुह में उजाते हलाक करके ॥ २॥

चिर पगालो के कारण वहुत दुष्टों को तंहा रा ॥

दुमो तरह वंता व में बट्टियों को दे ला उच्चार करके ॥ ३॥

पुनः दिको मत देखे तो सत्यप को बन्द हो को ॥

निडर खड़ी कौरव की सेना इसे दगवो टकेल करके ॥ ५ ॥

मा० भू० जो धनवाहन ३

तुम्हारी भारत की जननी हमारी ॥ ६ ॥

तू मंगला गार तू सि हि दाता, महिमा तुम्हारी

सकल जगते-पारी ॥ ७ ॥

तुमसे ही सहेदेव पाँचो दुपे नीर,

तिनमें था अर्जुन गजब शास्त्र धारी ॥ ८ ॥

तुमपै दुपे काट गि रिवर को कर धारी,

सुरपतिके शस्त्रों से नज को उधारी ॥ ९ ॥

दशरथ से धन नान जनका ही जानी

दशरथ तन परा मं शनरा सं हारी ॥ १० ॥

हो जेल स्वर्गी दुसेन कर तेरे हेतु

वेड़ी की कन कार की जासे प्यारी ॥ ११ ॥

जो चाहते जान तुमपै ही दुनान ॥

पैना लखें जे वेद न त तुम्हारी ॥ १२ ॥

• सेना में से ही आरत तन मन भाषा में है मना ।

कि रत्न ग ल लहो रत्न मने जानने मे ॥१॥

॥ अथ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

... तो न तो न तो न तो, ...

क. द. वि. प्र. म. नं. १०००. उल्लेखित पुस्तक में गुरुद्वारा

तेरे लिये जीयेगी, तेरे लिये मरेगी

मोहरी महल में जीनन गिरा में मोहरी १४११

मान को र कुल मल भी, हम पर निशेखरी हो।

॥ सा मा न भो न त क लो न ॥ श्री से भु नां गं गै ह मं ॥ ५ ॥

तुल्य न हि सात, न मील्य न सात ॥

॥ अथ विनिर्दिष्टा ता ॥ अथ विनिर्दिष्टा ता ॥ अथ विनिर्दिष्टा ता ॥

अथ मीमांसासिंहसंज्ञकस्य मीमांसासिंहसंज्ञकस्य

महाराष्ट्र राज्य सरकार

जैविकी संकेतः ५. निरुद्धा संकेतः ५.

इसमें लेखक की भाँति, जो तू मिले वैसे ही मया

पुनः पुनः लिखे, पुनः पुनः मन्त्रिणः ।

उत्तराखण्ड राज्य के अन्तर्गत स्थित है।

मे मानवो

मेव कुरु सन् मेव न, पूरा गुणितवन् न

उत्तरावन्ते सन्ति, नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नृपुत्रावन्तानामेव नृपुत्रावन्तानामेव

नाम जिन्ही भं निर्या जायेंगे मरे मरे ॥

नाम आशा की वजा जायेंगे मरे मरे मरे मरे ॥

आन पद जो न हो जायेंगे भरे मरे मरे मरे ॥

मे कहे को न हो जायेंगे मरे मरे मरे मरे ॥

रुत न हो जायेंगे मरे मरे मरे मरे मरे ॥

हम तो बिड़ो को नि ना जायेंगे मरे मरे मरे ॥

गद को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

हम तो को हूँ भोग हूँ भोग हूँ भोग ॥

ये मानवो ज्ञानममने उक्तं मंगलाप्रसादि अतननादि
 मेव कृष्ण समकालि पाठे तेदे कल्याण नाशने केसिहै
 उक्त है अथ सारि पाठन संन य असी अनादना को
 अदे कोदि पावनशे पर दुसमगना त के सां लो मे कुसन
 को न देतो एक क्रमि म हाश म सा द व न है

॥ किस बलसे के सिन प माद ह सी होत है ॥
 दित नु स लेते है तो परा नशी होते है ॥
 नाश आं भल से दिका मा कस को से भरी ॥
 योद क्षरज भी क हीं पर स नशी जाते है ॥
 भवस को जानते है महे मुका विल न पया ॥
 देख कर आ दित को भी न ज न व है ॥
 कुन हो पाद में दित ने के न जा को न पर
 बूट हो के है न न न ह सी होत है ॥
 दिगुं न मादि के नु न म स मि न्नं ज व स सा
 जातिः कृत म क र्क रं ॥ स र्ग स म्पा द्धि प ल नः ॥ १ ॥
 जने न व दिका का नी , दिगुं न प रि मा न नः ॥ २ ॥
 अरा ति सारि ने नैव . त ना ति सार रो गि ने ॥ ३ ॥
 गदणी व द मारेण र क ति सार गु न्या म
 दं क शा ने क भा ग न्त के ति न द म द र्क व ॥ ३ ॥

दिखला कुंजी वस होती है संतो गुवति मां
सागु मसुर को पति है से सी ना रि मां
हाथों से भपने को कुंजी खा सी की को गि मां
आं खों से ते ते ज सागु करुं ली मैं तू ली मां
बहु सास मस है नहिं मेरी सुगती है
खा सी के खा सी है तती के भी पती है

दोहा

पति ही प्रत पति ही भगति, पति ही सागु धार
पति ही की सेवा सदा है गुजि का सार ॥
आई के कहते पर वि का की से की मारि जो नहिं रहो ली है
गाली नहिं, जो ली मां है बहु तो ली को दी जाती है
खाने में कड़वी लगती है पर सास से मारि जाती है ॥

गा पन

बही जग में सत नली नार

पति ही निम काने सदा है पति ही हो मा नार
पति की सेवा पति की पूजा हो निम का सार ॥ बही ॥
पति अन्ना से मां बुरा हो है भपना भरपाट
पति प्रता का भ स पही है कहे उगी से प्यां ॥ बही ॥

नारी का पति ही ईश्वर है पति ही मायाधार
पति ही सार वस्तु है जग में और मूला संसार वही
चमक से सा शक्र पुष्प कुता का भी विद्या के उपर आनुर
होता है जो विद्या कि सतर है से नवाने देती है

कहते तु ये महाना जनों कह न ही जाती
पापी के जो म महज भी कह न ही जाती

चण्डाल, वीरों कुदृष्टि से देती को है त कला १
क्यों सिद्धि की के सा मने इसतर है धेन-का १

दूक्या है उग्र विभव की सव शक्ति पां भांये
तो भी पति वता को को है न ही सक्तता

नारी शास्त्र तो सदा यह उग्र देश वराने
होती का है मूला रूपा सी को ईश्वर जाने

सा सको ^{जो ते} ~~संस्कार~~ जात, रा श्वर के श्वर कर जात
भाता पुन स मान सक्त ज पको पहचाने ॥

पति विहीन संवशेक समाज इस पर अभि मनु की सत्य को
वात मुरार उत राक्षस तर है ते की है कह रही है

दिनापति सूना सव संसार

पति ही वत है पति ही वत है पति ही है करकार

पति ही से पति है इस बात की पति पत तखन हार
जब लों पति है तब लों का है निन पति निपत हार
आ को ने हारण मे पति के वही पति बना नार
अक पति न त रहे न पत में तो सब तरत हार
बिना पति पत के ला सी का जीवन है बिना हार ।

उस रा

जब ला न गई तेव ला न कहें

भूझार मुहाग के साध गता हूनी अड़ियन पर सात कहें ।

मरा की हूं मैं तो जीतेगी महराज न ही तो सात कहें ।

मे जीव न जीवन ता भया है इत जीव न से जो दिख न कहें ॥

दिल ह मने सर म दिता न न शाना सम कह कर

श्री खे में उते खा गये शक शाना सम कह कर

ह रि हार में उतर पड़े लु धि माना सम कह कर

कोरी मर र खा गये गुल काना सम कह कर

रुझी के को ठे म दग मे जा करवाना सम कह कर

कहा ही बिचड़ खा गये हल वाता सम कह कर

उत्ते का की दश मे दे ख कर जा कुल ग) है शेते

मोरी लु से जाते है गु स न खाता सम कह कर

ननु सुसंक्रियतो महेष्टे किं भव भवना पूर्वो नो भवति विस्तीर्णो भवति
न हीनता ता देवि मे आनन्दमभिलष्ये आनन्दमभिलष्ये मे देव स न है

श्लो ५३

कोटश्च पतन्मूनश्च मुखे पूर्य मे वचः॥

हे कोट सता भुक्ता जैनिव मे न स्यात् क्षणम्॥१॥

नतीता भूता भूतान् देता दै होरहं

संश्रिता मित्रिना को दाडि इक्षु गिरिजा मेजात सुन्दर शरीराय मिस्र कसवेगे

कोट पतन्मून पूर्य मे वचः कोटश्च पतन्मून पूर्य मे वचः

वीर्येण वरांडी हाथ पकड़ेंगे रंदिन देहो मे वचः जित हो एन में खावेंगे।

भारती के दासी तो अंग मे नगा मे जात मानो देवना गरीब नाम हो जावेंगे॥॥

रंदि मौ ओर राक्षसि मे मे भेदी वचा है

श्लो ५४

वशना दूरते विरतिं । स्पशना दूरते विरतिं

त्रैभुना दूरते विरतिं ॥ वैश्यां साक्षात्प्राप्ता ॥१॥

वैश्याऽसौ प्रदमयान्ता । स्वमिच्छा समाधिना ।

कामिनिस्तत्र दूयते ॥ त्रैवना निधना निव ॥२॥

स्वेदिनी वांस्सुना वैश्या इत्यमरः

विरतिं प्रत्ययात् ता ता ही । न हादमना गच्छति

अन्वेष्टुं रमते नित्यम्, स्वैरिणी साभिधीयते ॥ ३॥

गङ्गा न। ये मुखन हीं अं खानि शाहे पि पाजो ये विषय शब्दो मे ॥ १॥

तुम अयने हा थों से अपना वेड़ा दुवाओगे और कृपा करोगे ॥ २॥

हृद्यों से जय जेव लेगी खाली। सुनो मे फिर वा ही की गाली।

गले में जै से ये हाथ डाले हं से निओ तुम जलाना करोगे ॥ ३॥

गले फरीना अगर रहेगा तो जर रहेगा न कर रहेगा।

असा रखा ते में ना महोगा सड़के आइ दिवा करोगे ॥ ४॥

नमान हो गान व्या रा गा। गले में लाना न आहार होगा।

गली के फुटो हैं मैं से जोते उसी तरह तुम जीवा करोगे ॥ ५॥

५१० से सी दुई हों न संगति से - अतः एव न न न संगति पर भी

आप लो गो गो सुना रहा हूं ध्यान से सुनिचे ॥

सां धून सो संग नान हइ ये ओ गंगनादि साहिबसा संगनादि

वा के सरजूति पां।

कहे के कुलो न जाति दया की न जाने भौंति चरकी सलोनी काड़ि

लोनि संग सुंति पां ॥

खो जे वरद माहि धुन को दिवा लें गार मन पक्षतात जै से द्याति फकी

धुति पां

कहे कवि जीवन धिक्कार से से जीवन को ने रि-धुति कारण

करे प्रतीक ॥ ते नृदे भगवद् भक्त मुनीसी धानाभी (धुव) लिखते हैं
मो - परतिपत्न्यमृदकप दसमान, मोहप्रो दममत्तानपंजने ॥

ॐ कुलवानी निवारिं नारि सती गृह आनहिं चेरिं चो रज्जो ॥
सिंह वनोक्त नव्याम से मिरमुली दुई फेसन दशति है
ग था सिंहः स्वगु हां निराप किम्लि दुं गला पुनः निनो रूप नि
मम गुहा कासी - है तन परगान
- टंग है सन का खूब मीराला है, निराला है ना आना है ।
सिर पर धरा है दो पमाने हो पनेकरा,

३५ ग के राही शूद्र सीखे जानो होकरा,
गला कमी न बां अले नक घटि दोन रा
कही भागे गला महन साला है ॥ तंग

सूदर द पहिन के ले हाथ में छड़ी

मौरन सेवा शूद्र उठ गये कट बां अके बड़ी

मेश जो प्रगदे खलो फेसन है रस बड़ी

रंग के हरा का केवल का ला है । तंग ॥

लो सेर करने जा रहे लेडी भी साथ है

लिग रि द मुंह में सी खती हाथी का दांत है ॥

तेली का बेल देखलो न भैं की भाँति है ।

रंग मिलता है बेसा ही काला ॥ ८ ग ॥

रूमा लहू देखलो क्या रेशमी लीला

जि ससे कि शूता भाड़ के मुँह भी सफा दिपा

प्रताप स्वतन्त्र देश को जो तो डुबो दिपा ॥

अब दिनु अमलानि वाला है ॥ ८ ग ॥

हीक है कैसन का मुँह, दोष नही अंगेजी पढ़ के
करवे ही क्या करेगे ।

तो हा ।

जि स प्रकार अब चल रहा, कैसन का मुँह जान

आज सुनाता है वही, पाठक मर सजान ॥ १ ॥

जो वह वक्त साल में, जी. पे ले गये कास

मात पिता की रभी रहे, उससे सफा उकास ॥ २ ॥

एक तो न लोले पितृहीने, बड़ा निराश

वेतो की संसार में करे न कदुभी काश ॥ ३ ॥

अंगेजी पढ़ कर हुआ, सुदतो ने मिल में

हमसे निरन करत करे, करके तिरफे नैन ॥ ४ ॥

नीता जी अक से सके मारे आहमरी वो लो जों मे संक

गान गाते हैं ॥

(भजन) श्रीगोपी पदने से प्रापका ।

अपनी कृपाई उमर मरकी सब मैने लगाने पदने में ।
नहीं मैंने से दूक कभी खाया सब करदि पाखर पदने में ॥ १ ॥
अकृषो स मगर अनदेखो तो क्या केन आखन दल गौ है ।
ओड़ी अंग्रेजी पदने पर सांवा पयो नही समझता है ॥ २ ॥
जब से कुछ अंग्रेजी की पद घं गतो दना सीख लि मा ।
नसत वही से ने अदनी का पद राग जोड़ ना सीख लि पा ॥ ३ ॥
नस अंग्रेजी पदने का पसी तालि गाला है एके रक्ता कहे ।
अनता उमर अचिन्ता अगोचर विभु की परमान को निवे ॥
गमन ! जाने क्या क्या है दुपा दुपा सरनार नुहा से आंखों में ॥ १ ॥
दीनों दुनि का दोनों का है दीदार नुहा से आंखों में ॥ २ ॥
तुमारी भी तन हो पन में तुम ता रभी सवते हो पन में ॥ ३ ॥
लिख ओ अमल का रहता है मण्डार नुहा से आंखों में ॥ ४ ॥
एक शक्ति प्रकृति की प्राप्ता की है पाछ विविध भगवान की है ।
संसार की आंखों में तुम हो संसार नुहा से आंखों में ॥ ५ ॥
दिन और रात का थोड़ा है पास के पास मका उलका है ।
सेवा करने मोर रंग का है ॥ तार नुहा से आंखों में ॥ ६ ॥
कहने का ताप पी पद नि उत विभु से जो देव सुखि पाव ही है ॥

। पद पुतण । जले विद्याः स्थले विद्याः । विद्याः पत्नी मस्तके,
ज्यान्ता माला कुले विद्याः ॥ सर्व विद्या समं जगत ॥
इस प्रलोक से सिद्ध करते हुए श्री प्रबोका खंडन ॥

भगवान् हैं मग्न हैं मग्न न । तुझे कैसे विभाऊं मैं
महीं बल कोई मेरी ॥ जिसे सेवा में जाऊं मैं ॥११॥
कहैं कि सवरह जावा हन । कि नु ममौ बूझ हो हजा,
निराकार है बुझाने को , अगर बंधी जाऊं मैं ॥१२॥
तुझी हो श्रुति में भी , तुझी व्यापक हो कुलों में,
मला भगवान् को मग्न न पर कैसे न जाऊं मैं ॥१३॥

जगाना भोग कुछ नु ममो , बड़ा श्रम मान करना है ।
जिना न है जो सब जग को उसे कैसे जिनाऊं मैं ॥१४॥
है जिसकी श्रुति से तेशंन पे सूजन नं श्रुति शरी ।
महा भयंकर हो उस को अगर सी पक दिनाऊं मैं ॥१५॥
भुजा में है नग इन है नली न है न वेशा नो ॥

उम हा निनेप नाग पला , कहां नर न जगाऊं मैं ॥१६॥
इसी ति से श्रुति प्रबोका का खंडन सिद्ध होता है ॥

लोकमान्य तिलक के मृत्यु पर शोकान्वित
मैंने सर्व गुण सम्पन्न साक्षात् ईश्वरी देवता सागर परम
कारुणिक गुरु जी का बनाया हुआ कुटुम्ब लोकों का संग्रह
हृदय वेद परिनिष्ठित श्रद्धादिम्

भास्वत्यनीति परिशीलन-कारुण्यीतिम्

श्री लोकमान्य तिलकं तिलकं नमः

कालो हि दुहितृदायिका सहस्रज सहस्र॥

हे देवदत्त कर्मणि कुटुम्बमगमिन

कारुण्यता तव गता जनता वदन्ति

नो नेत्रे भविष्यति हि त्वया ध्रुवेन

श्री लोकमान्य हस्तां मर्यादां जनानाम् ॥२॥

श्री लोकमान्यो नृपतीति विज्ञो

जनप्रियो वैश्वकुलेन सिंहः

गुणाकरः सर्वकलाप्रवीणः

श्री लोकमान्यो गतोऽप्युत्तम ॥३॥

विदोः तव कृपाधरा

कृपता सावित्रे कालौ दिदी

जनप्रियेन कापी साधनम्

नररत्नं हि विता त्वया कृतम् ॥४॥